शास्त्रधर्म प्रचार सभा

[प्रयाग : कलकत्ता]

शास्त्रधर्म प्रचार सभा के मंत्रिद्वय—
श्री गोपालदत्त शास्त्री, काव्य-पुराण-वेदान्ततीर्थ
श्री नारायण कृष्ण, वेदान्त-वाचस्पति, एम० ए०

प्रकाशक
भारतीय कार्यालय
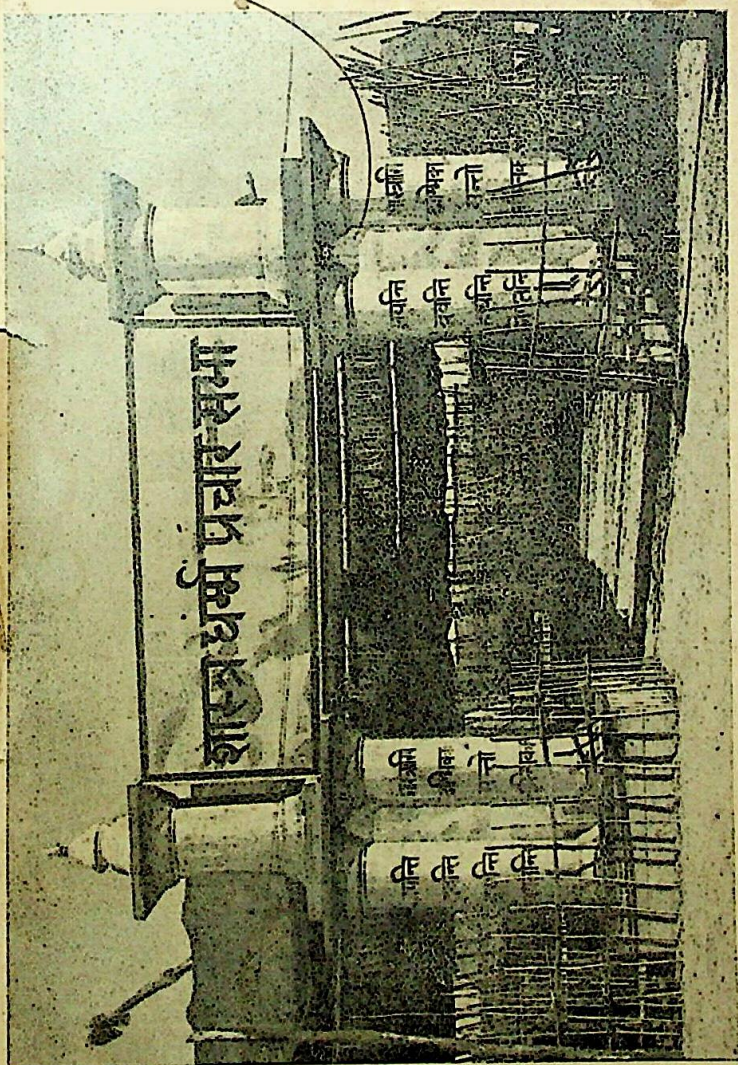
शास्त्र धर्म्म प्रचार सभा

श्रीगोपालकृष्णो विजयतेतमाम्।

शास्त्रधर्मप्रचार सभा का कार्य्य

प्रयाग और कलकत्ता

प्रथम अध्याय

संक्षिप्त इतिहास

देश की अवस्था दिनानुदिन शोचनीय होते देखकर तथा विशष रुप से परम महिमामय हिन्दू धर्म की ग्लानि से सर्वजन मान्य परमाराध्य परम कारुणिक जो भारतीय साधु समाज तथा वैष्णव समाज में डिप्टी साहब के नाम से विख्यात थे, अतिशय चिन्तित हुये। इस महापुरुष का नाम श्रीमान् उपेन्द्रमोहन था।

व्याख्यान का फल स्थायी नहीं होता है। पुनः पुनः स्मरण करना आवश्यक होता है। यह कार्य पुस्तकों के द्वारा ही अच्छी तरह से हो सकता है। इसी लिये १८३१ ई० में "हिन्दूधर्म" नामक एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित की गयी। श्रीमधुसूदन स्वामी जी इसे वितरण करने के लिये उज्जैन लेकर

गये। हिन्दू सन्तान को विना मूल्य पुस्तिका दी जायगी इसे सुन कर सैकड़ों हिन्दुओं ने बड़े प्रेम और आग्रह के साथ पुस्तक लिया। पुस्तका का समादर देखकर उसमें परिशिष्ट भाग १६३३ ई० में जोड़ा गया। ऐसी और भी पुस्तकें पहले छपाई गयी थीं। मनुष्यों की भावना शुद्ध हो और सत्य का ग्रहण करे इस दृष्टि से 'ट्रूथ' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र १६३३ ई० की १४ वीं अप्रैल, वि० सं० नववर्षारंभ में प्रकाशित किया गया। अंग्रेजी शिक्षितों के मोह को दूर करने के लिये संपूर्ण भारत में यह चल सकेगा इस हेतु से पत्रिका अंग्रेजी में ही प्रकाशित की गयी। भारत के सभी प्रदेशों में पत्रिका भेजी गयी। छोटी छोटी पुस्तिकाओं में प्रकाशित प्रबन्धों के प्रचार में प्रत्रिका द्वारा बड़ी सुविधा हुयी। यह 'ट्रूथ' पत्रिका आज २० वर्षों से अविच्छिन्न रुप में प्रति सप्ताह प्रकाशित होती आ रही है।

१६२३ ई० से महापुरूष प्रतिवर्ष प्रयाग में शीतकालिक निवास करते थे। १६२८ ई० से प्रयाग त्रिवेणी संगम के निकट अलोपीवाग मुहल्ले में एक भवन निर्माण कराकर निवास करने लगे। त्रिवेणी संगम पर प्रतिवर्ष माघ मेला लगता है। इस भवन से इस मेले में पुस्तक प्रचार की विशेष सुविधा रही। कार्यों की वृद्धि के लिये १६३६ ई० में हिन्दू-धर्म-प्रचार सभा का संघटन किया गया। जनवरी महीने में बांध के ऊपर एक भूमिखण्ड पर पाल टांग कर सभा का प्रथम

अधिवेशन हुआ। 'हिन्दूधर्मपरिशिष्ट' नामक पुस्तक बिना मूल्य बांटी गयी। यह भी घोषित किया गया कि इस पुस्तक में लिखित विषयों के सम्बन्ध में सन्देह होने पर सभा में उसका समाधान किया जायगा।

आज कल हिन्दू नाम धारी अलीक हिन्दुओं की भी अनेक सभायें स्थापित हुई हैं, ये सभायें हिन्दूधर्म-विरोधी कार्य करती हैं। हमारी सभा भी उनमें ही न गिनी जाय इसलिये सभा का नाम परिवर्तन कर "शास्त्रधर्मप्रचार" सभा रखा गया। साइनबोर्ड पर यह स्पष्ट रूप से लिख दिया गया कि यहां राजनैतिक चर्चा सर्वथा निषिद्ध है।

सभा का प्रधान कार्य तीर्थराज प्रयाग धाम त्रिवेणी क्षेत्र में प्रति वर्ष माघ महीने में मकर संक्रान्ति से वसन्तपञ्चमी तक हुआ करता है। पुण्य शलिला गंगा यमुना की संगम भूमि में मण्डप निर्माण कर सभा का अधिवेशन होता है। १९४३ ई० में दुर्दैव वश सभा का आयोजन नहीं हो सका।

तीर्थ राज प्रयाग के अतिरिक्त हरिद्वार, उज्जैन (कुम्भ मेला) तथा श्रीवृन्दावन, मथुरा, पुरी धाम, माहेश (रथयात्रा); वैद्यनाथ धाम, काशी धाम (शिवरात्री), पूर्व बंग के लांगल बन्ध मेले में सभा के कार्यकर्त्ताओं ने प्रचार किया। सभी हिन्दू सन्तान को अङ्गीकार पत्र पर ठिकाना के साथ हस्ताक्षर करने पर पुस्तकें विना मूल्य दी जाती हैं।

अङ्गीकार पत्र का आदर्श नीचे दिया जाता है :—

प्रतिज्ञा-पत्र ।

मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि निम्न लिखित सातों विषयों को यथाशक्ति पालन करने की चेष्टा करूँगा । मैं इन सभी नियमों को सभी समय पालन करने में असमर्थ हो सकता हूं किन्तु उन्हें पालन करने की मेरी हमेशा कोशिश रहेगी ।

१ शास्त्रों को मानना और शास्त्रीय आचारों को पालन करने के लिये मैं हमेशा यत्नवान रहूँगा ।

२ "शास्त्र, भागवद्वाक्य और अभ्रान्त है" इसमें मैं सर्वदा अचल विश्वास रखने की चेष्टा करूँगा ।

३ धर्म को वोट से निर्णय करना निकृष्ट ईश्वरद्रोह और महान् नास्तिकता है । जो लोग हिन्दू-धर्म को वोट द्वारा निर्णय करने में सहमत हैं, तुच्छ सांसारिक सुखों के लिये धर्म को तिलाञ्जलि देने को तैयार हैं उन अलीक हिन्दुओं को समाज से बाहर करने और उनसे बिलकुल सम्बन्ध-विच्छेद करने की चेष्टा प्राण देकर भी करूँगा ।

४ धार्मिक-विषयों में संदेह होने पर सनातन प्रथा के अनुसार ज्ञानी भक्तों के पास जाकर उनसे अपनी शंकाओं का समाधान कराऊँगा ।

५ हिन्दु-धर्म की रक्षा के लिये सदा तत्पर रहूंगा । कोई इस पर आक्रमण करेगा, तो उसका उत्तर दूँगा । (क)

६ हिन्दु धर्म के पुष्टिकरण के लिये हिन्दु-धर्म सम्बन्धी पत्रिका स्वयम् लूँगा, यदि आप न ले सकूँ, तो जिससे उसका प्रचार बढ़े ऐसी चेष्टा करुँगा। (ख)

७ अपने ग्राम या वासस्थान में धर्म-सभा की स्थापना करने की चेष्टा करुँगा और हर मास उसकी बैठक कर धर्म-चर्चा और धर्म-पुष्टि की चेष्टा करुँगा।

(क) इस उद्देश्य से "हिन्दू धर्म्म व परिशिष्ट" नामक पुस्तक लिखी गयी है। पाँच वर्ष की परीक्षा द्वारा यह देखा गया है कि हजारों आर्यसमाजी और हजारों हिन्दूधर्म्म में उत्पन्न नास्तिक इस पुस्तक को पढ़ कर हिन्दू हुए हैं। कोई भी नास्तिक इस पुस्तक की किसी भी बात का इन पांच वर्षों में कोई उत्तर नहीं दे सका।

उपर्युक्त लिखी पतिज्ञाओं को स्वीकार करने पर यह पुस्तक बिना मूल्य दी जाती है। प्राप्ति स्थान—९१ चौरंगी, कलकत्ता। इस पुस्तक का घर घर प्रचार करने के लिये एक ही प्रति को अनेक लोग पढ़ें।

(ख) इसी उद्देश्य से "भारताजिर" नामक साप्ताहिक पत्रिका ९१ चौरंगी, कलकत्ता से बंगला में निकलती है। सैकड़ों रुपये की हानि सहते हुए भी प्रचार के लिए, इसके संचालकों ने इसका मूल्य केवल दो रुपये (वार्षिक) रखा है।

इसके साथ ही सभा की ओर से एक विज्ञप्ति बंगला १३४८ साल में प्रकाशित की गयी, जिसका रूप इस प्रकार है।

विज्ञप्ति—

आज कल चारों ओर से धर्मविप्लव उपस्थित करने के लिये विशेष चेष्टायें हो रही हैं। नास्तिकतापूर्ण विदेशी शिक्षा हिन्दू धर्म की मिथ्या निन्दा कर हिन्दू बालक-बालिकाओं को अपनी धर्मशिक्षा से विमुख कर सायन्स रूप विज्ञान के बहाने* विपरीत ज्ञान की नदी बहाकर शास्त्रीय सनातन सत्य को मिथ्या द्वारा साबित कर हिन्दुओं के मन से धर्म भावना मिटा देने के लिये सुदीर्घ काल से चेष्टा कर रही है। घोर कलियुग के प्रभाव से धर्मभाव शिथिल हो गया है। इसपर कांग्रेस अनेक प्रकार के प्रलोभनों से जनसमूह को धर्म मार्ग से भ्रष्ट करने के लिये विशेष प्रयास कर रही है। इस घोर दुर्दिन में किसी भी हिन्दू को उदासीन रहना कदापि उचित नहीं है। सब को अपने अपने धर्म की रक्षा के लिये उठ खड़ा होकर लग जाना चाहिये।

धर्म ही हिन्दुओं का सर्वस्व है। हिन्दू धर्म छोड़ कर हिन्दू कभी कुछ नहीं चाहता है। हिन्दू का सम्मान यश लौकिक सुख सब कुछ धर्म के सामने तुच्छ है। यही हिन्दू की विशेषता है। हिन्दू के लिये परलोक पहले और इहलोक पीछे है।

---

* सत्ये ज्ञानम सत्यस्य असत्ये सत्य भावना।
विपरीतं हितत् प्रोक्तं विज्ञानं च ततो मतम्॥
सत्य को असत्य जानना तथा असत्य में सत्य की भावना करने को विपरीत ज्ञान कहते हैं इसी को विज्ञान या सायन्स कहा जाता है।

इसी लिये हिन्दू धर्म को धर्म सर्वस्व या परलोक धर्म भी कहा जाता है। लाखों लाखों वर्षों से हिन्दू इसी भाव से जीवन यापन कर रहा है। हिन्दू! आज क्या पिता पितामह का धर्मपथ छोड़ कर तुच्छ संसार सुख के लिये अपनी प्राचीन विशेषता को तिलाञ्जलि दोगे! नहीं कभी नहीं। राख से ढंकी हुई आग के समान सभी हिन्दुओं में धर्म भावना जल रही है। हिन्दू का धर्म भाव अग्नि और संसार सुख राख है। संसार सुख मण्डित धर्मभाव ही हिन्दू चाहता है। हिन्दू जानता है कि धर्म के बिना संसार में सुख असंभव है अतएव धर्म आगे और संसार सुख पीछे है—हिन्दू दोनों ही चाहता है।

सभा द्वारा प्रकाशित-वितरित पुस्तकों का विवरण।

*तारका चिह्नित पुस्तकें योग्यता देख कर दी जाती हैं।

* श्री भक्ति कौस्तुभम्	...	१५००
* शास्त्र मानिबो केनो (बंगला)	...	५००
* रिजन सायन्स एण्ड शास्त्राज (अंग्रेजी)		५००
हिन्दू ग्लोरी ...	,,	२५०
हिन्दूधर्म व परिशिष्ट (हिन्दी, बंगला)		५५६५०
मि० गाँधी के नाम खुली चिट्ठी (हिन्दी,बं०,अं०)		३७०००
जाति भेद (अंग्रेजी, बंगला, हिन्दी)		३६७५०
बाल्य विवाह	,,	३४५००

हिन्दू धर्म ही एकमात्र धर्म क्यों ? (अंग्रेजी, बंगला, हिन्दी)	३०००
मिस डीह (अंग्रेजी) ...	७५००
इन्टर प्रिटेशन अफ शास्त्र ज (अंग्रेजी, बंगला)	४०००
इन्टर कास्ट मैरेज बिल (अंग्रेजी)	३०००
संस्कृत एनीमस विगटन अफ सीन	३०००
वर्णाश्रम स्वराज्यसंघे सभापतिरभिभाषण (बंगला)	५०००
प्रादेशिक सनातनी सम्मेलन (अभिभाषण बंगला)	२०००
इनफैन्ट मौर्टिलिटि ...	१०००
आयुर्वेद भिण्डिकेटेड ...	१०००
इण्डिया ऐक्ट (अंग्रेजी) ...	१०००
संस्कार कहा के चले (बंगला) ...	१०००
कमनसेन्स इन थिराप्युटिक्स ...	१०००
प्रबलेम अफ पब्लिक हेल्थ इन बंगाल	१०००
श्रीरामकृष्ण डिस्टर्शन सेन्टेनरी ...	५००

कुल—२०१५०

श्रीभगवान की अपार कृपा से बदरीकाश्रम से सेतुबन्ध रामेश्वर पर्यन्त और सिन्धु देश से मणिपुर तक सर्वत्र कोई न कोई पुस्तक जरूर पहुँची है।

परीक्षा ।

सभा केवल पुस्तकें बांट कर ही नहीं रह गयी । १९३३ ई० में सभा की ओर से एक विज्ञापन प्रकाशित किया गया कि हिन्दू धर्म विषयक सनातन सत्य सम्बन्धी ज्ञान जिससे छात्रों में तथा विद्वानों में प्रचार पाये इसलिये सभा एक परीक्षा लेगी जिसके पाठ्य पुस्तकें "शास्त्र मानिबोकेन" और 'रिजन सायन्स एण्ड शास्त्राज्, बंगला अंग्रेजी के लिये निर्धारित हुयीं । खेलातचन्द्र इन्स्टट्यूट, कलकत्ता और तेजनारायण जुबली कालेज, भागलपुर में परीक्षायें गृहीत हुईं । २३ जुलाई १९३३ को १२ से ३ बजे तक परीक्षायें ली जायंगी, परीक्षार्थियों को केवल कलम लाना होगा । परीक्षा में सैकड़े ६० नम्बर पाने वाले २० छात्रों को एक वर्ष तक ५) प्रति मास के हिसाब से प्रत्येक छात्र के लिये वृत्ति दी जायगी, यह घोषणा की गयी । परीक्षा फल आशानुसार नहीं हुआ, केवल दश छात्रों को वृत्ति मिली । अवशिष्ट छात्रों के लब्धाङ्क सैकड़े ६० से कम होने पर भी उत्साह वर्द्धनार्थ वृत्ति दी गयी । तीन चार वर्ष परीक्षा होने पर देखा गया कि परीक्षार्थीगण पुस्तक पढ़े बिना ही मनमाना उत्तर लिख रहे हैं । वृत्ति पाने वालों की भी मति गति में कोई परिवर्तन नहीं देखा गया । अतः ४ वर्षों के बाद परीक्षा बन्द कर दी गयी । पुनः १९४८ ई० में पश्चिम बंग के हालिसहर स्कूल और विहार के आरा कालेज में परीक्षा एक वर्ष हुई ।

—:o:—

तीर्थराज प्रयाग में सभा

१३४५ (१९३९) का विवरण।

गङ्गा जमुना सरस्वती की तीनों धारायें जहां एकत्र होती हैं। वहीं संगम पर मकर संक्रान्ति की पुण्य तिथि में हिन्दू धर्म प्रचार सभा का आयोजन हुआ था। मेला क्षेत्र में दूकानों सभाओं और तम्बुओं का अन्त नहीं था फिर भी लोगों की दृष्टि एक वृहद् मनोरम सभा की ओर अवश्य आकृष्ट होती थी। यही हिन्दू धर्म सभा का पट निर्मित गृह-मण्डप था। अन्य सभाओं में जन समूह का अभाव ही था फिर भी इस सभा में लोग मधुमक्खी के छत्ते के समान जुटे हुए थे। वास्तव में सब लोग मधु चखने के लिये ही आये थे। साधु सन्तों के साथ सत्संग विद्वानों के अमृतमय धर्मोपदेश तथा सर्वोपरि धार्मिक पुस्तकों की प्राप्ति से लोग कृतकृत्य हो रहे थे। अमूल्य वितरित की जाने वाली पुस्तकों में हिन्दूधर्म, जातिभेद, बाल्यविवाह, खुली चिट्ठी प्रभृति दुर्जन मुखभंग चपेटिका एवं अमृतमय ज्ञान युक्त पुस्तकें प्रमुख थीं। सचमुच में यह सनातन धर्म का सात्त्विक ज्ञानयज्ञ था। शिवावतार श्रीशंकराचार्य की रत्नमाला में कुछ परिवर्तन कर इस सभा के विषय में कहा जा सकता है—

दृष्टिं गता वा श्रवणं गता
त्रिवेणी तीर्थस्य मणिस्वरूपा।
पुनातु चित्तं सदोत्सुकानाम्
रमेशगौरीशकथेव सद्यः॥

मेला अधिकारियों ने इस सभा के लिये वह स्थान दिया था जो खड्ढे में था। सनातनधर्म की अवस्था ही कुछ ऐसी हो गयी है। हिन्दूतीर्थ में अछूतोद्धार हरिजन सभा आदि का तो उच्चस्थान और प्रकृत सनातनधर्म सभा का स्थान कीचड़ में। महापुरुष की कृपा से इस अवस्था से बहुत व्यय करके उसे ऊँचा बनाया गया। सुन्दर सुन्दर खूब मजबूत शाल वृक्ष के विशाल खंभों पर मनोरम शामियाना टांगा गया था, सभाकी चान्दनी में सुन्दर खिले हुए कमलफूल की चित्रकारी थी। मध्य में बनी हुयी वेदी पर वक्ताओं के आसन के साथ साथ कथा कीर्तन का भी आयोजन था। फाटक के दोनों खंभो पर घोषणा लिखी हुई थी—

> जयन्ति शास्त्राणि द्रवन्ति दांभिकाः।
> हृष्यन्ति सन्तो निपतन्ति नास्तिकाः॥
> शास्त्रों का विजय हो, दांभिक गण भाग जायें।
> सन्त लोग प्रसन्न हों, नास्तिकों का पतन हो॥

प्रति दिन साधु महात्मा कल्पवासी यात्री तथा धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थ भक्त गण झुण्ड के झुण्ड सभा में योग दान करते थे। तुलसीकृतरामायण का गान ताल स्वर के साथ और रामायण की कथा होती थी। अनन्तर सनातनधर्म के विविध अङ्गों पर अधिकारी विद्वानों के प्रभावशाली प्रवचन होते थे। वक्तागण आज कल के अधार्मिक मतवाद के कुयुक्ति जाल को अपने सत्तर्क से छिन्न-भिन्न कर सत्यसनातन धर्म के सिद्धान्तों की

सुप्रतिष्ठा अत्यन्त मधुर भाषा में करते थे। सूर्य किरणों के प्रभाव से शीत काल का कुहासा फट जाता है, वैसे ही सद्वक्ताओं की सदुक्तियों से नास्तिक अलीक हिन्दुओं के अधर्ममय संशयान्धकार छिन्न-भिन्न हो जाता था।

पहले ही घोषणा कर दी गयी थी कि जज्ञासु मात्र से प्रश्न करने पर वक्ता गण उत्तर देंगे। बंगला, हिन्दी, अंग्रेजी में मुद्रित हिन्दूधर्म, जातिभेद, बाल्यविवाह, श्रीभक्ति कौस्तुभम् प्रभृति पुस्तकें हिन्दू सन्तान मात्र को बांटी गयी हैं।

इस स्थान को देखने ही से जान पड़ता था। "मधुवात ऋतायन्ते, मधु क्षरन्ति सिन्धवः"। वहाँ का वायु मधुमय है, मधुमत्पार्थिवं रजः, वहाँ की धूली मधुमय है और जो ज्ञान वितरण होता है वह मधु से भी मधु है।

परिणामाशुभं कर्म भ्रान्तानां मधुरान्मधु।
करोति सूदनं योहि स एव मधुसूदनः॥

उस मधुसूदन को प्रणाम है जो परिणाम में अशुभ फल देने वाले तथा भ्रान्तों के लिये मधुर से भी मधुर मालूम पड़ने वाले अशुभ कर्मों का सूदन (विनाश) करते हैं। वे मधुसूदन मानो वहीं विराजमान हैं क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने मुख से कहा है—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः॥

जहाँ पर मेरे भक्त मेरा यश कीर्तन करते हैं, वहाँ पर मैं वैकुण्ठ और योगियों के हृदय को छोड़ कर वास करता हूं।

द्वितिय अध्याय

सभा के कार्यों पर सम्मति

सभा के कार्यों की प्रशंसा अत्यधिक हुई है उसमें कुछ संग्रह करके निचे दिया जाता है—

जगन्नाथ पुरी–रथ यात्रा १३४३-(१९३६ ई०)

एक अवसर प्राप्त सिविलसर्जन हिन्दू धर्म व परिशिष्ट पढ़कर रो पड़े और बोले मेरा भगवान नहीं है विज्ञान ही भगवान है। छोटी पुस्तिका पढ़कर मेरा भ्रम दूर हुआ। विज्ञान की अपेक्षा शास्त्र भगवान कोटि गुण श्रेष्ट हैं। आजसे विज्ञान और नई सभ्यता के चकाचौंध में न भूलकर इस पुस्तक अनुसार चलूंगा। पुस्तक का दर्शन कर धन्य हुआ तुमलोग यह पुस्तक मुझे देकर धन्य हुये।

जनैक उपच्चदस्थ कर्मचारी—

पहले हंसी मजाक करने पर सभा के कार्यकर्त्ता ने इसका कोई उत्तर न देकर पुस्तक खोलकर विज्ञान सम्बन्धी और नारी संग दो अंशों को उन्हें पढ़ सुनाया।

"पुस्तक जितना देखता हूँ उतना ही मधुर लगता है। पुस्तक एक रत्नभण्डार है। तुमने अमूल्य निधि मुझे दिया और मैने तुम्हे उल्टी सीधी सुनाई है। तुम मुझे क्षमा करो।

तुम दूसरो के पास जाओ। आवश्यक होने पर मैं भी तुम्हारी सहायता करुंगा"

एक दूसरे उच्चपदस्थ कर्मचारी—

पूर्वोक्त व्यक्ति जब इनके पास लेकर गये तब इन्होंने मुझ को कहा कि धर्म टर्म नहीं है जितने बेवकूफ हैं वे ही धर्म धर्म चिल्लाते हैं। (पूर्वोक्त आफिसर को उन्होने कहा क्या आप इसी दल मे शामिल हो गये हैं) हमारे साथी ने कहा कि इस लड़के से थोड़ा सुनिये तो देखें, आपकी कैसी अवस्था होती है।

सभा के सेवक ने विज्ञान और नारी संग नामक दो अध्याय पढ़कर सुनाया। सुनकर कुछ देर मौन रहकर दूसरे कर्मचारी ने कहा—

हिन्दू धर्म इतना महान है यह कभी समझा नहीं था। इस पुस्तक के पढ़ने के पहले कौन जानता था कि हमारा धर्म कितना महान है। मैं आज से ही इस पुस्तक को पढ़कर घर में सब को सुनाऊंगा और यथा शक्ति प्रचार करुंगा।

इस पुस्तक के पढ़ने पर विज्ञान की चकाचौंध में भूलकर नव्य सभ्यता के मोह में कौन पड़ेगा। हजारों वर्ष पहले ऋषियों ने जो कह दिया है। वैज्ञानिक लोग अब कुछ कुछ उसे जानने लगे हैं। विज्ञान पद पद पर भूल भी करता है। जिन्होंने इस ग्रन्थ को लिखा है और तुमलोगों के द्वारा प्रचारार्थ भेजा है उनके निकट मै विशेष ऋणी हूँ। मैं नास्तिक

था इसलिये तुमसे ऐसी बातें की। मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ।
एक प्रसिद्ध उत्तर भारतीय पंडित- ने पुस्तक देकर कहा--

ओह ! ऐसे भी भारत में मनुष्य हैं। तब तो यह आशा होती है कि जो लोग हिन्दू कह कर परिचय देने में लज्जा करते हैं उनको भी एक दिन मति गति हिन्दू धर्म पर लौट आयेगी। भगवान इस महापुरुष को दीर्घायु करें।

मैं बड़ा पापी और नास्तिक हूं। मेरा पुत्र भगवद्भजन एवं पूजन करता था। मैं अनाचार करता और भगवान का नाम भी नहीं लेता था इसलिये मेरा पुत्र मुझसे विनीत भावसे निषेध करता था इससे मैंने उसपर ऐसा प्रहार किया जिससे दो चार दिन दुःख भोगकर वह मर ही गया। इस पुस्तक को देख उसकी मुझे याद आ गयी। मैं इस पुस्तक का नित्य पाठ करूंगा तुमने बड़ी शान्ति दी।

पन्डित जी के पास कई एक बंगाली थे वे सबके सब खड़े होकर प्रभु जगन्नाथ जी का नाम लेकर बोल उठे कि हमलोग हिन्दू धर्म के अनुसार चलेंगे और दूसरों को भी चलायेंगे। पुस्तक को पढ़ेंगे। उस महा पुरुष के श्री चरणों में हमारा कोटि-कोटि साष्टाङ्ग कहियेगा।

समुद्र किनारे कुछ कटक के छात्रों से भेंट हुई। सभा के सेवक ने आचार और नारी संग ये दो अध्यायों को पढ़ सुनाया। इसे सुनकर एक छात्र ने कहा कि हमलोग स्वीकार करते हैं कि शुभ आचरण से चलेंगे।

एक दूसरे छात्र ने कहा—

मै इस अंचल में सबसे बदमास लड़का हूं। मैंने निश्चय किया था कि कल इसाई बनूगा। हमारे धर्म में ऐसी अपूर्व वस्तु के रहते हुये भी इसाई क्यों बनूगा। मैं बचन देता हूँ कि हिन्दू होने की चेष्टा करुंगा।

एक नये आदमी ने आकर कहा—

सिनेमा नहीं चलोगे। सिनेमा तो रोज ही होता है। ऐसी बात कभी सुनें हो। आओ देखो लड़के ने पुस्तक लेकर कहा। हमारे धर्म में ऐसी बात है। हम अपने धर्म के लिये जान दे देंगे। इनलोगों को पढ़ने के लिये पुस्तक देकर चला आया। दूसरे दिन समुद्र किनारे पुनः मिलने पर एक छात्र ने कहा हमारे धर्म में इतनी चमत्कार पूर्ण बाते हैं और हमलोग इतने अज्ञ हैं। हम हिन्दू सन्तान हैं इस गौरब से छाती ऊंची हो जाती है। हमलोग एकदम पागल हैं इसीसे अपने पवित्र धर्म को छोड़ दूसरा क्या कहता है इसे सुनने के लिये दौड़ते रहते हैं। हमलोग सब प्रकार की अच्छुंखलता छोड़ देंगे। जगन्नाथ का नाम लेकर सबों ने प्रतिज्ञा की पुस्तक पढ़ेंगे और प्रचार करेंगे।

धार्मिक मुसलमान—

पुस्तक थोड़ा पढ़कर कहने लगा। आपलोगों का धर्म इतना सुन्दर है। हिन्दू होना बड़े भाग्य की बात है। मुझे भी हिन्दू होने की इच्छा होती है। श्री जगन्नाथ जी से प्रार्थना है

क मुझे अगले जन्म में हिन्दू कुल में जन्म दें। जिन्होंने पुस्तक लिखी है उनको सलाम और आपको भी।

माहेश मे पुनः रथ यात्रा

१४३४-(१९३६)

श्रीरामपुर वयनविद्यालय का छात्र—

इस पुस्तक की तुलना नहीं है। इस पुस्तक से स्कूलों की कुशिक्षा के हाथ से छात्रों का छुटकारा होगा।

एक बूढ़ा आदमी—

इस पुस्तक का मिलना बड़े भाग्य की बात है। इस पुस्तक वितरण से बढ़कर दूसरा काम नहीं है। मेरा लड़का बड़ा पापी है। इस पुस्तक को उसे देकर कहूंगा या तो इसे मानो या इसका जवाब दो।

कर्मचारी ने एक दूसरे को कहा-

महाशय यह पुस्तक अपने लड़के को जवाब देने के लिये कहेंगे। इसका जवाब नहीं दे सकेगा।

तीर्थराज प्रयाग माघ १३४४(१९३८)

दल के दल लोग अंगीकार पत्र पर हस्ताक्षर कर पुस्तक लेते थे और धन्य होते थे। कुछ लोग ऐसा समझते थे कि अंगीकार पत्र पर हस्ताक्षर न करने से सच्चे हिन्दू हम नहीं हो सकेंगे। ऐसा भाव उदय हो गया था। बहुतों ने कहा

मैं धर्म के लिये प्राण दे सकता हूं। बहुतों की आँखों से आँसू निकल पड़े।

किसी किसी ने कहा—

हिन्दू धर्म इसबार पुनः जीवित होगा।

कुछलोगों ने चिल्लाकर कहा—

आपलोग धन्य है। खूब काम कर रहे हैं। आपकी जय हो।

एक जमींदार ने बड़े आवेग से कहा—

धर्म के लिये ऐसी किसी ने चेष्टा नहीं की। ऐसा धर्म के लिये रुपया पानी के समान कोई नहीं बहाता है। यही पुण्य कार्य है।

अवसर प्राप्त डिप्टी इन्स्पेक्टर स्कूल ने कहा—

आपलोग इतनी बहुमूल्य पुस्तक बिना मूल्य दान करते हैं। ऐसी एक पुस्तक कोई लिख नहीं सकता है। धर्म के सम्बन्ध में लोग बिलकुल अज्ञ हैं इसीसे नास्तिकता का प्रसार है।

पुलिस डिप्टी सुपरिन्टेन्डेट ने असिस्टेन्ट डाइरेक्टर पब्लिक हेल्थ को दिखाकर कहा—

ये इसाई होने जा रहे थे आपकी सभा देखकर मन कुछ फीरा है। इसी समय पिता पितामह के धर्म की ओर झुके हैं।

एक मुसलमान ने कहा—

मुझे हिन्दू होने की इच्छा होती है।

कालेज के एक छात्र ने कहा—

मैं हिन्दू धर्म के विषय में कुछ नहीं जानता, जानने के लिये बड़ी इच्छा होती है ।

वैद्यनाथ धाम

फाल्गुन १३४४ (१६३८)

एक पण्डे ने कहा—

हिन्दू धर्म के पक्ष में ऐसा कार्य नहीं हुआ है । जिन्होंने यह पुस्तक लिखी है वे चिरायु हों ।

एक ने खुली चिट्ठी दो चार पेज देखकर कहा—

ऐसी पुस्तक महा पुरुष बिना साधारण मनुष्य नहीं लिख सकता है ।

एक ने जाति भेद देखकर कहा—

खूब काम कर रहे हैं। जाति भेद मिट जाने पर हिन्दू धर्म में रह ही क्या जायगा। इस धर्म के चले जाने पर दुनियां चूल्हे में चली जायगी ।

श्री वृन्दावन धाम २७-२-३८

अयोध्या निर्मोही अखाड़ा के महन्त श्री रघुनाथ जी महा पुरुष धर्म रक्षा के लिये लगे हैं। साधुओं को ऋण में बान्धने के लिये लगे है। इस कार्य में जो सहायता करेंगे वे धन्य होंगे ।

हरिद्वार चैत्र १३४४ (१९३८)

श्री पूर्णचन्द्रपुरी जी ने, एक दशनामी सन्यासियों को कहा—

ये लोग पैसा खर्च करके कलकत्ते से धर्म प्रचारार्थ आये हैं। अर्थ लाभ की आशा से नहीं आये हैं। आप लोग हस्ताक्षर नहीं करेंगे ?

श्री वृन्दावन १३४५ (१९३८)

पण्डित श्रीकृष्ण शास्त्री पंजाबी ने कहा—

उज्जैन में हिन्दू धर्म पुस्तक मिली थी। इस पुस्तक को पढ़ कर बहुत लोग लाभवान हुये हैं। मैं जानता हूं। 'ट्रूथ पत्रिका देख चुका हूं। यह हिन्दू धर्म का रक्षक है।

स्वामी गंगादास जी—निराकारी आश्रम अवधूत मण्डल कनखल ने कहा—

ये तो भगवान स्वयं प्रकट होकर काम करते हैं।

महान्त रामस्वरूप जी—

हमलोगों का इंजन नहीं है। ये पुरुष इंजन हैं हमलोगों को पीछे पीछे खींचकर ले जायेंगे।

उदासी मण्डलेश्वर स्वामी गङ्गेश्वरानन्द जी (अन्ध)—

डिप्टीसाहब बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

उदासी मण्डली का एक साधु—

हिन्दू धर्म व परिशिष्ट पुस्तक अति चमत्कार पुस्तक है। समस्त शास्त्रों से केवल एकत्र कर संग्रह किया गया है देखकर अवाक हो जाना पड़ता है।

श्री साधु बेला के महान्त—

बंग देश में डिप्टी साहब बहुत बड़ा भारी काम कर रहे हैं

शान्तशरण जी ने (महान्त जी की बातों के उत्तर में)

हाँ बंग देशीय डिप्टी साहब ने एकदम युगान्तर उपस्थित कर दिया है।

पण्डित यदुकुल भूषण शर्मा—

पुस्तक की बात सुन चुका हूं। मिली नहीं थी। प्रयाग के एक महापुरुष डिप्टी साहब ने इसे लिखा है। जब आप लोगों को देखता हूं और कार्यों का स्मरण करता हूँ तब अपने में एक विशेष शक्ति का अनुभव करता हूँ। जिसका तेज नहीं है वह भगवान को पा नहीं सकता है। हिन्दू धर्म वो परिशिष्ट के समान दूसरा कोई पुस्तक देखा नहीं है।

साधु बेला मठ के एक प्रचारक—

कलिकाल में ऐसा पुरुष तो देखा नहीं जाता है।

पण्डित बलराम पंजाब धर्म प्रचारक—(संकल्प पढ़कर)

वाह! वाह! एकदम असल बात लिखी है जैसा उचित होना चाहिये वैसा ही लिखा है।

श्री स्वामी करपात्रीजी——(खुली चिट्ठी देखकर)

ऐसा सुन्दर लेख इतना सुक्ष्म विचार मै देखता नहीं हूँ। जहां जो श्लोक देना चाहिये वहां वही श्लोक दिया है। इस पुरुष के दर्शन करने की इच्छा होती है।

श्री क्षेत्रे रथ यात्रा १३४५ (१९३८)

भवानीशंकर दास अवसर प्राप्त स्कूल सबइन्स्पेक्टर——

हिन्दू धर्म परिशिष्ट पुस्तक पढ़ने से हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में कोई शंका ही नहीं रह जाती है। क्या अपूर्व पुस्तक लिखी है क्या कहूँ। सायन्स की चोटी पकड़कर अंग्रेजी चालबाजी को मिटा दिया है।

एक पण्डित ने कहा——

कलियुग में पाप का पूरा प्रभाव है। आपलोग जो कार्य कर रहे हैं यह बहुत उत्तम कार्य है।

आचारी मठ के महान्त जी महाराज——

डिप्टी साहब जो कार्य कर रहे हैं दूसरा कोई ऐसा न किया न कर सकेगा।

सब रजिस्ट्री आफिस के हेड क्लर्क——

जिन्होंने आपको इस कार्य में भेजा है उनको प्रणाम और आपलोगों को प्रणाम, पुस्तको को प्रणाम।

स्कूल के दो छात्र——

आर्लीमैरेज और कास्टसिस्टम से युक्ति लेकर स्कूल के डिबेटिंग में हमलोग लड़ेंगे और जीतेंगे।

दो और छात्र--

हमलोग धर्म की बात कुछ नहीं जानते इसीसे इतन दुर्दशा है आपकी पुस्तकों से बड़ा उपकार होगा।

श्री गोबिन्द नामक एक व्यक्ति--

ओह श्रीकृष्ण चन्द्र ने आपको भेजा है। आपलोग उनके प्रतिनिधि हैं।

बहुतेरे छात्रों ने--

सिगरेट फेंक कर पुस्तकें लीं और मस्तक पर चढ़ायीं।

श्री लक्ष्मीनारायणपाल और जानकीनाथ राय--

सब बातें सुनकर आँखों में आँसू भरकर बोले बाबा आशीर्वाद करो जिससे मेरी धर्म में बुद्धि हो।

एक छात्र ने कहा--

हमारे सनातन धर्म के पक्ष में बोलने वाला कोई नहीं है। मेरी बड़ी इच्छा है कि आप के कार्य में लगूं।

चाथ ग्राम बर्द्धमान १३४५ (१९३८)

एक दूकानदार--

ऐसी भी पुस्तक बनी है। पुस्तकों को प्रणाम कर बोला। मेरी दूकान पर सायंकाल तास खेला जाता है। तास बन्द कर इस पुस्तक का पाठ होगा।

और एक आदमी--

महाशय, ये तीनों पुस्तकें मानो ब्रह्म' विष्णु महेश्वर है। जहां जायगी वहां के लोगों का भ्रम दूर हो जायगा। जाति

विचार जगेगा। हिन्दूत्व आवेगा।

सांकराई ग्राम पाठशाला।

छुट्टी के आध घन्टे पहले गुरु महाशय नित्य इस पुस्तक को पढ़कर सुनाते थे—

काशी धाम १७ फाल्गुन १३४५ १९३९ ई०

पण्डित प्रवर पञ्चानन तर्क रत्न महाशय—

आपके प्रयत्न को देखकर पुलकित होकर आनन्दाश्रु के साथ श्री श्री ब्रह्मण्य देव के चरणारविन्द में आपलोगों की सफलता के लिये प्रार्थना करता हूँ। (समवेत सबों को कहा) जो यह कार्य करा रहे हैं वे अतिशय विशिष्ट पुरुष हैं। उनकी अतिसूक्ष्म दृष्टि और विचार की बात क्या कहेंगे।...

.....इन लोगों का कार्य, कार्य लायक हो रहा है।

एक सज्जन ने कहा—

ऐसा काम करते किसी को देखा नहीं है। पुस्तक द्वारा प्रचार कार्य अपूर्व दिखाई दे रहा है। व्याख्यानो से कुछ नहीं होता है जो होता है वह क्षणस्थायी।

एक न्याय रत्न ने कहा—

इन पुस्तकों में जिस भाव से उत्तर दिया है वह हमलोगों के द्वारा संभव नहीं है। इस पुस्तक से हमलोगों के प्रचार कार्य में खूब सहायता होगी।

एक कथा वाचक—

पुस्तक लेने के लिये मानो पागल हो गये, पुस्तक लेकर बोले। हम कुछ नहीं जानते पुस्तक पढ़कर सीखेंगे। आप लोग हमसे बहुत अधिक कार्य करते हैं।

एक ने उपस्थित सभों को कहा—

धर्म डूबने जा रहा है। ये लोग सनातन धर्म के रक्षार्थ खड़े हुये हैं

एक उत्तर भारतीय पाठ कर रहे थे वे बोले—

यह बड़ा उत्कृष्ट कार्य हो रहा है।

एक नेपाली सज्जन ने कहा—

भगवान समय समय पर अपने आदमियों को धर्म रक्षार्थ भेजते हैं यह बड़ा उत्तम कार्य होता है।

दशाश्वमेघ घाट पर कुछ बंगाली आपस में बात कर रहे थे पुस्तकें बड़ी सुन्दर हैं, सही करके ले लो नहीं तो बंट जायंगी।

एक पंजाबी छात्र—

मैं बचपन में भेड़िया धसान में पड़ कर आर्य समाजी बन गया था। ... ...

हमारे सनातन धर्म में सत्य है यह जानता हूँ किन्तु कुछ मालुम नहीं है इसलिये पुस्तक लेने के लिये आया हूँ।

दो चार पूर्व बंगीय छात्रों ने कहा—

आपलोग पूर्व बंग में जायें, वहां जाने से बड़ा

उपकार होगा।

कुछ आर्य समाजियों ने कहा—

हमलोग आपके साथ हैं और आप के पहरेदार हैं।

एक पक्का आर्य समाजी—

विज्ञाप्ति में जो आदेश लिखा है वह बहुत ठीक है। सचमुच में धर्म की बात कभी वोट से निर्णीत हो सकती है ?

एक आर्य समाजी रो पड़ा—

तीनों पुस्तकें मैंने अच्छी तरह से पढ़ली है, सचमुच में अमृत हैं अमृत। प्राणप्रण से सनातन धर्म का कार्य कीजिये।

एक इसाई बोला—

हिन्दू धर्म की बातें बड़ी अच्छी हैं। आपलोग दया करके हमें उपदेश दें।

सिंहल वासी परिव्राजक आर, स्वामी—

अंग्रेजी पुस्तक पढ़कर बोलें। ऐसी ही पुस्तकें चाहिये इससे कितना उपकार होगा सो कह नहीं सकता।

एक पुलिस कानिस्टिबिल—

पुलिस लाईन में सब लोग हिन्दू धर्म व परिशिष्ट पढ़ते हैं। हमलोगों को बड़ा आनन्द होता है। कोई नास्तिक बन कर शंका करता है और दूसरा इस पुस्तक से उसका जबाब देता है।

एक पण्डित पुस्तक पढ़कर--

जिन्होंने इन अद्वितीय पुस्तकों को लिखा है वे मनुष्य नहीं है। ऐसी पुस्तक कभी सुना भी नहीं देखा भी नहीं।

गोरखपुर के यदुनाथ प्रसाद--

बड़े भाग्य से पुस्तकें मिलीं। तीर्थराज प्रयाग धाम का फल मिल गया।

एक आदमी ने कहा--

आपका अथर्व वेद (हिन्दू धर्म व परिशिष्ट) एक प्रति हमें दीजये।

धर्म के लिये बहुत धन व्यय किया है इसे देख सब लोग मुग्ध हो गये। अंगीकार पत्र पर हस्ताक्षर कर वितरण करने वालों को, सभा को और सभासदों को प्रणाम कर चले गये। सभा के कार्यकर्ताओं से आज्ञा ले आँखों में आँसू बहाते पीछे हटते हटते चले गये जिससे सभा की ओर पीठ न करना पड़े, ऐसा देखा गया। सिपाहियों के मुख से भी सनातन धर्म की ध्वनि हो रही थी।

अहमदाबाद के महान्त दामोदर स्वामी--

आपलोग बड़ा उत्तम कार्य कर रहे हैं।

एक साधु रोते रोते बोले--

भगवान का जय जय कार हो। आपके प्रति भगवान की पूर्ण कृपा हो।

एक निरक्षर व्यक्ति—

आपलोगों का कल्याण हो। आपलोग भाग्यवान हैं।

एक ने कहा—

इस सभा में आना बड़े पुण्य का काम है।

झूसी के एक साधु—

सच्चा हिन्दू धर्म इसी सभा में है। कितना दल हिन्दू धर्म मिटाने के लिये जान लड़ा रहा है। आपलोग उसी धर्म की रक्षा के लिये क्या नहीं कर रहे हैं।

एकने कहा—

हिन्दूधर्म की यथार्थ व्याख्या यहीं मिलती है। और सब जगह तो ठगविद्या चल रही है।

राय बरेली के एक जमीन्दार—

आप लोग बड़ा सत्कर्म कर रहे हैं।

एक ने कहा—

सब लोग धर्म मिटाने में लगे हैं आप लोग श्री शंकराचार्य की तरह धर्मरक्षा के लिये आये हैं।

प्रतापगढ़ के केदारनाथ पाण्डेय—

इस कलियुग में धर्म के लिये कोई एक पैसा खर्च नहीं करता है। आप लोग हजार हजार रुपया खर्च कर रहे हैं। न जाने किस बैकुण्ठ से आकर आप लोप कार्य कर रहे हैं।

एक ने कहा—

आप के दर्शन से, स्पर्श से और यहाँ आने से पुण्य होता है।

एक दूसरे ने कहा—

आप लोग धर्म को बचा रखे हैं।

एक दूसरे ने कहा—

आप लोग इसे कभी छोड़ियेगा नहीं। धर्म के शत्रु चारो ओर हैं।

पण्डित रामटहल दास जी ने कहा—

आप धर्म के साक्षात मूर्त्ति हैं। आपका जीवन चरित्र भक्तमाला म रहना चाहिये।

एक नैपाली सज्जन व्याख्यान सुनकर—

रोत-रोते बोले—आप के मुख से निकले अमृत मय वचन से मेरे कान धन्य और हृदय पवित्र हुए हैं। आप को आप के माता पिता को प्रणाम। किस दूर बन से आकर आप की बातें सुन कर मेरा जीवन धन्य हुआ। आज हमारा भाग्योदय हुआ।

लाङ्गलबन्द-इदानी पूर्व पाकिस्तान

शुक्लाष्टमी १३४५ (१९३९ ई०)

ब्रह्मपुत्र स्नान मेला चैत्र शुक्लाष्टमी—

ब्रह्मपुत्र नद में स्नान कर परशुरामजी माता के बध करने के पाप से मुक्त हुए थे। हम लोगों के उद्देश्य को सुनकर बहुत लोग गद्गद् हो गये।

एक ने कहा—

आप लोगों के आने से हमलोगों का बड़ा उपकार हुआ है।

एक बैरीसाल जिलाक्षी ने कहा—

आप हम लोगों के जिले में नहीं जायेंगे। यह पुस्तक प्रत्येक ग्राम में जानी चाहिये।

एक ने कहा—

बाल्यविवाह पुस्तक बनी है इस बार युक्ति से नास्तिकों का मुख बन्द करेंगे।

बहुत से लोग दूसरों को बुला बुला कर लाने लगे, अंगीकार पत्र पर हस्ताक्षर करने और कराने लगे।

एक वृद्ध ने कहा—

सनातनधर्म लुप्त होनेवाला नहीं है। गाँव गाँव में इसका प्रचार करना जरुरी है। आप की पुस्तक बहुत अच्छी है।

एक ने कहा—

इसे पढ़ने से जीवन सफल होता है।

एक युवा पुरुप पण्डित—

हमारे हेड मास्टर साहब इस पुस्तक को पाकर बहुत प्रसन्न होंगे और लड़कों को भी सिखलायेंगे।

किसी ने कहा—

हमलोग आप की सभा में योग दान करेंगे। कहाँ जाने से अथवा पत्र लिखने से पुस्तकें मिलेंगी।

हिन्दू सिपाहियों ने (उस दिन रामनवमी होने से) कहा—

ऐसे स्थान में पड़े हैं, हम लोगों का धर्म कर्म सब गया। आप लोग बहुत उत्तम उत्तम कार्य कर रहे हैं। हमलोग केवल पेट के धन्धे में लगे हैं।

एक नवीन युवक—

हम लोगों का धर्म ऐसा है, हमलोग नहीं जानते थे। कहाँ जाने से सब मालूम होगा बतलावेंगे?

वैद्यनाथ धाम।

शिवरात्रि १४ चैत्र १३४६ (१६४० ई०)

शिवरात्रि के अवसर पर वैद्यनाथ धाम में क्या बालक क्या वृद्ध सभी पुस्तक लेने के लिये टूट पड़े। दश बारह वर्षों के बालकों ने यह सुन कर कि बालकों को पुस्तकें नहीं दी जायंगी, हाथ जोड़ पैरों पर गिर कर कहा—हम लोग क्या नहीं पढ़ेंगे। हमलोग छोटे होने पर भी पुस्तक पढ़ेंगे और अन्य छात्रों को पढ़ायेंगे। वैद्यनाथ धाम के पण्डों ने एक स्वर से कहा—नास्तिक विदेशी शिक्षा ने बालकों का माथा विगाड़ डाला है। अंग्रेजी पढ़ा सो गया।

किसी किसी ने कहा—

'कलयुग अब जानेही वाला है। सत्ययुग आने में अब विलम्ब नहीं।' 'महापुरुष न होने पर यह कार्य कौन कर.

सकता है।' 'ये लोग धर्म के लिये जीवन उत्सर्ग कर हम लोगों का बड़ा उपकार कर रहे हैं। हम लोगों को ज्ञान देने आये हैं।'

एक कार्यकर्त्ता के कुएँ से जल लेने के लिये एक ब्राह्मण से लोटा डोरी मांगने पर ब्राह्मण ने कहा—

आप लोग संसारी जीवों को ज्ञान दान दे रहे हैं धर्म के लिये इतना कर रहे हैं। आप को थोड़ा जल भर देंगे यह हमारा परम सौभाग्य है।

बहुतों ने प्राणपन से कहा—

हमलोग अपने धर्म की सेवा करना चाहते हैं। हम लोग धर्म के लिये जान दे सकते हैं

पण्डित हरलाल ठाकुर—

मधुबनी प्रभात लाइब्रेरीयन पण्डित हरलाल ठाकुर ने कहा—आप लोग जो कार्य कर रहे हैं, ऐसा कार्य कभी किसी ने नहीं किया है। दया कर एक बार मधुबनी आइये। हम आप के साथ हिन्दू धर्म की सेवा में सहयोग देंगे।

पण्डित जयनाथ झा पुन: पुनः आग्रह करने लगे—

अनुग्रह कर के एक बार रामनवमी के समय जनकपुर आइये। इधर आप लोग गये नहीं, एक बार जाना आवश्यक है।

पण्डा कामाख्यानाथ ने कहा—

हिन्दूधर्म की सार बातें हिन्दू धर्म व परिशिष्ट पुस्तक

में है। अति अपूर्व धर्म की प्राप्ति इसमें है।

पण्डित वासुदेव त्रिपाठी बोले :—

आज कल लोग जातिभेद अस्पृश्यता और बाल्यविवाह के विरुद्ध बड़ा आक्रमण करते हैं। इन पुस्तकों के अभाव में हिन्दू धर्म की बड़ी हानि हुई है। ये पुस्तकें अजेय हैं।

दो अपूर्व घटनायें—

१ एक व्यक्ति पुस्तक लेकर बाबा वैद्यनाथजी के निकट पढ़ रहा है ऐसा देखा गया। उनका स्वर मनुष्य के स्वर के समान नहीं था। थोड़ा पढ़ता है और बाबा वैद्यनाथ जी के निकट बहुत कुछ कहता है। वह क्या कहता है यह सुना नहीं गया। डेढ़ घन्टा ऐसा पाठ होने पर बाबा वैद्यनाथ को हाथ जोड़कर अचानक अदृश्य हो गया।

२ जाति भेद और बाल्यविवाह नामक पुस्तक पाकर एक व्यक्ति घर चला गया। मार्ग में १६ मिल चलकर एक चट्टी पर एक आदमी के पास हिन्दू धर्म व परिशिष्ट नामक पुस्तक देखा। यह पुस्तक धर्म प्रचार सभा की ओर से दी जा रही है यह जान कर वह १६ मिल से लौट कर वैद्यनाथ धाम आया। दूसरे दिन सभा के कार्यकर्त्ता जब लौट जाने की तैयारी कर रहे थे तब वह व्यक्ति हाँफते हुए पहुँचा और ३८ मील चल कर पुस्तक ले गया। पुस्तक प्राप्ति से ३८ मील चलने की थकावट दूर हो गयी।

—:o:—

प्रयागराज।

७ फाल्गुन १३४७ (१९४१ ई०)

२० दिनों में प्रायः १८०० लोग अंगीकारपत्र पर हस्ताक्षर किये। इस वार नवीन तोरणस्तंभ द्वय द्वारा सभा की अद्भुत शोभा हो रही थी।

एक ने फाटक देख कर कहा—

इसमें रुपया लगाना सार्थक है, नहीं तो बैंक में रहने से भी क्या होता।

एक दूसरे ने साथ ही कहा—

इससे बढ़कर और क्या है ? धन्य हैं। यह सब कार्य मनुष्यों की सद्गति के लिये होता है।

एक बूढ़ा आर्यसमाजी फाटक देख कर बोला—

मैं ५६ वर्षों से प्रयाग में हूँ कभी ऐसा फाटक नहीं देखा। हम लोग सब एक ही हैं कोई फर्क नहीं है

एक ने कहा—

डिप्टी साहब ने सनातनधर्म का पुल बांध दिया। अबकि बार नया फाटक बना है।

एक दिन एक बूढ़े ने आकर कहा—

बड़ा विचित्र फाटक बना है। डिप्टी साहब तन-मन-धन से भगवान के काम में लगे हैं। जब से सभा बनी है तब से इसका काम बढ़ता ही जाता है। छोटे छोटे धर्मों के एक न एक नेता खड़े हो जाते हैं किन्तु सनातनधर्म के पक्ष

से कोई नहीं खड़ा होता, केवल एक डिप्टी साहब ही हैं भगवान के सिवाय सनातन पक्ष में कौन खड़ा होगा। जब कोई चीज मार्ग में पड़ा रहता है, उसका कोई मालिक नहीं मिलता है तब वह चीज सरकारी हो जाती है वैसे ही सनातन धर्म भगवान का धर्म है।

एक ने कहा—

अब तक चारो ओर अन्धकार दिखता था। अब देखते हैं कि सनातनधर्म की रक्षा हो गयी।

श्रीज्योतिषचन्द्र मुखोपाध्याय—

संकल्प पढ़कर हाथ जोड़ कर रोते रोते बोले—मैं इस गंगातट पर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं इस कार्य को खूब करना चाहता हूँ और करूँगा।

एक ने कहा—

आप ही लोग सनातनधर्म के स्तंभ हैं।

दारागंज के पण्डित चन्द्रचूड शास्त्री ने कहा—

ऐसा आदमी नहीं रहने से सनातन धर्म कैसे ठहरेगा।

गोरखपुर के एक पण्डित ने कहा—

हमको अब मालूम हुआ कि हमारे धर्म का एक रक्षक भी है।

बस्ती जिले के एक यात्री ने कहा—

इस कार्य के लिये आप लोगों को बार बार धन्यवाद देता हूँ। धर्म भारतवर्ष से मिटता जा रहा है।

लखनऊ के वैद्य महावीर शास्त्री—

सभा समाप्ति पर एक व्यक्ति द्वारा यह सब होता है यह जान कर बोले। भगवान इनको चिरायु करें।

वीरपुर के जमीन्दार बाबू संकटा प्रसाद ने कहा—

सनातनधर्म के तरक्की देवेवाला केहू नइखे। अइसन अइसन लोग के ना रहला पर सनातन धर्म कइसे रही।

पण्डित यमुना प्रसाद पाण्डेय -

भला आप लोग नहीं रहते तो आज भारत की दशा क्या होती ?

प्रतापगढ़ के पण्डित गुरुप्रसाद शास्त्री ने कहा—

हम लोगों के लिये कितना खर्च करते हैं।

चित्रकूट के बड़े महन्त ने कहा—

वाह ! वाह !! हमारे धर्म के लिये कितना खर्चा कर रहे हैं।

एक ने कहा—

गङ्गातट पर मैं दान नहीं लेता। इसलिए पुस्तक नहीं लूंगा। यदि तुम्हारा धर्म ही चला जायगा तो स्नान दान से क्या होगा। इस पर वह लौट कर हस्ताक्षर किया और पुस्तक लेते हुए कहा - बाबू जी बड़ा कसूर हो गया था।

सभा के प्रतिष्ठाता स्वयं आकर कहां सामियाना खड़ा किया जायगा, कहां तोरण द्वार बनेगा यह सब दिखला गये। दूसरे दिन सामियाना टांगने वालों ने सब गड़बड़ कर दिया। अब क्या करेंगे कुछ समझ नहीं सके। इसी

सवत्र देखा गया कि जमीन पर एक ईंट रखी हुई है। माप कर देखा गया कि जहां ईंट रखी है वहाँ से सब माप ठीक है। ठीक स्थान पर ईंट किसने रखी है इसकी खोज होने लगी। कोई कुछ बता न सका। मजदूरों ने एक स्वर से कहा जरूर भगवान ने ईंट बैठाया।

वैद्यनाथ धाम

२१ फाल्गुन—१३४८ (१६४१)

प्रचारकों को देखकर पहले के परिचितों ने बड़े आनन्द से कहा—

"ये लोग प्रतिवर्ष हमारे धर्म की रक्षा के लिये आते हैं।"

अम्बिका चरण वन्दोपाध्याय नामक एक पन्डा ने कहा- कैसा आयोजन किया है धर्म रक्षा के लिये। लोगों को इससे सुबुद्धि अवश्श होगी।

उमाकान्त पाठक—

यह संस्था कैसे चलतो है ? एक पुरुप चलाते हैं ? वाह ! बाह !! वाह !!! वह कौन हैं ? कहां के राजा हैं ?

एक ने सभा का उद्देश्य सुनकर कहा—

जो सनातन धर्म छोड़ता है वही तो पागल है।

ग्वालियर के पण्डित केशवलाल कृष्ण ने कहा—

धन्य है ! धन्य हैं !!

एक मराठी सज्जन बोले—

"आपलोग कितना बड़ा कार्य करते हैं उसे हम कह नहीं सकते। हिन्दूओं के विरोधी सब कार्य करते हैं और हमारे धर्म का सर्वनाश करते हैं उसके विरुद्ध एक भी व्यक्ति नहीं बोलता है। आज देखता हूँ आपलोग खड़े हुए हैं।"

कविराज रुद्रप्रताप जी (खूब आनन्द से)—

इन सभी पुस्तकों की बहुत जरुरत है।

गजानन्द पण्डा—

आँखों में आँसू भरकर कहने लगे आपलोग जो कार्य करने आये हैं इससे बड़ा कार्य संसार में दूसरा और क्या है? यह क्या जिस किसी का कार्य है?

ओह भगवान की साक्षात कृपा आपलोगों पर हुई है। अन्यथा ऐसा कार्य हो नहीं सकता।

एक ने गत वर्ष पुस्तक ली थी। वह कहने लगा—

"इस पुस्तक को कण्ठस्थ करना चाहिये। आवश्यकता पड़ने पर बोल न सके तो पुस्तक लेने से फल क्या?

पूरी धाम

[१३३८ (१९४२ ई० २५ अषाढ़, २४ जून]

इस वर्ष बंगाली यात्री अधिक आये थे। सभी पुस्तक संकल्प बड़े आग्रह से लेकर माथे पर चढ़ाते थे।

श्री निर्मलचन्द्रबन्धोपाध्याय-(वयस ५०-५५)—

क्या सनातन धर्म पुराना हो गया है उसे आज के लायक बनाना पड़ेगा ? क्या बाप बदलना पड़ेगा ? राम ! राम !! कैसा दुर्दिन आ गया है ।

श्रीकृष्ण नारायण काव्यतीर्थ-(वयस ६०-६५)—

ऐसा धर्म, ऐसा सत्य क्या पृथ्वी पर कहीं है ?

कटक जाजपुर के श्री नारायण चन्द्र राय (कालेज का छात्र)-

ऐसा महत्वपूर्ण कार्य आपलोग कर रहे हैं। हिन्दू धर्म तो लुप्त होता जा रहा है। बड़ा आनन्द हुआ ।

एक ने कहा—

आपलोग धन्य हैं। आपलोगों के न रहने पर कलि के जीवों का उद्धार कैसे होगा। जब धर्म में ग्लानि आती है तभी ऐसे लोग पैदा होते हैं।

भीड़ से कुछ छात्रों ने कहा—

अरे, वही ६१ नम्बर चौरंगी कलकत्ता से आये हैं ! इतने बड़े डाक्टर इतना बड़ा रोजगार करते हैं सब धर्म के लिये। रोजगार सार्थक है।

पण्डित कृष्णगोपाल माथुर (झालरा पाटन)—

इतना विराट कार्य एक पुरुष के द्वारा होता है आश्चर्य ।

तीन चार बंगाली—

हमलोग गाँव में धर्म सभा करते हैं इसे पढ़कर सब को सुनायेंगे ।

के० मुरार जी बम्बई—

हमलोग इन पुस्तकों का प्रचार करेंगे।

कतिपय उडिसा निवासी—

आप लोग दया करके इन पुस्तकों को उडिया भाषा में प्रकाशित करें। हमलोग पढ़ नहीं सकेंगे क्या ?

शतीश चन्द्र वसु—

हिन्दू धर्म का कुछ भी नहीं जानता। जानने की बड़ी इच्छा है।

नारायण दास गंगा—

सपरिवार हिन्दी अंग्रेजी पुस्तकें बड़े आग्रह से ले गये।

ब्रजविहारी राउत कटक—

जो हमलोगों के लिये ऐसा कार्य करते हैं उनको हम लोग भगवान कहेंगे। शास्त्रों में क्या है हम नहीं जानते हैं। पाषण्डी लोग जो कहते हैं उसका विरोध भी नहीं कर पाते हैं।

पण्डित बलभद्र त्रिपाठी काव्यतीर्थ अध्यापक हरिहर टोल—

जय जगद्बन्धु जय जगद्बन्धु—

अहा हा, आपलोग ऐसा कार्य करते हैं आपकी जय हो।

अनिल चन्द्र चक्रवर्ती वर्द्धमान—संकल्प पढ़ते पढ़ते—

वाह ! वाह !! अरे वाह !!! यही तो चाहिये। दीजिये दीजिये हस्ताक्षर करता हूँ।

श्यामनाथ दास की माता—(खुलना)

यह पुस्तक लक्ष्म घट क पास रखूंगी सब स्त्रियों को पढ़कर सुनाऊंगी।

गोलोक विहारी पाड़ा--(रामगढ़ मेदनीपुर)

बापरे सनातन धर्म नहीं मानेंगे ? यही तो हमारा अस्तित्व है।

विष्णु दास पुजारी-(उज्जैन)

अहो बहुत ठीक आज अलभ्य लाभ हुआ।

ज्ञानदा प्रसन्न राय-(वृद्ध, स्वर्ग धाम पुरी)

प्रणाम ! भगवान करें कि आपलोगों के काम मे लग सकूं।

हरे कृष्ण दास—केन्द्रा पाड़ा—

वाह वाह, भगवान आपलोगों का मंगल करें।

एक ५० वर्ष के सज्जन—

महाशय, हवा बदली है। मेरे साथ तीन चार व्यक्ति ऐसे आये हैं जो विलायत से हो आये हैं। अभी तिलक लगाकर मन्दिर के आगे खड़े हैं।

महाराज भक्तचरण दास—कांथी—

अहा इसी धर्म का प्रचार कररहे हैं आपलोग धन्य हैं।

रासबिहारी सेन—बिडन स्कायर कलकत्ता—

सनातन धर्म यदि गया तो रहा क्या ? आपलोग अति उत्तम कार्य कर रहे हैं।

मनोमोहन घोष बैरीसाल—

आप लोगों की चेष्टा सफल हो। भगवान आपका मंगल करें।

कृष्णगोविन्द नाथ नोआखाली—

शक्ति रहते यदि कुछ न करें तो हमें धिक्कार है प्रणाम।

मालदह का एक आदमी—

कैसा शुभ सम्बाद आपने सुनाया।

नित्यानन्द दास वृन्दावन—

हमारे धर्म की पुस्तिका। कितना व्यय हो रहा है जय गौर।

श्री रघुनाथ मिश्र शास्त्री पुरी—

हमारे धर्म में जो उत्कृष्ट सार है वह सब इसमें धर दिये हैं।

एक पंजाबी साधु—

वाह रे वाह, बड़ा आनन्द। धन्य भाग्य।

पाण्डेय सोमेश्वर रेवा शंकर शृंगेरी मठ द्वारकापुरी—

आपलोगों की जय होगी। सनातन धर्म की जय होगी।

विभूति रंजन भट्टाचार्य–घूर्णि कृष्ण नगर—

जिससे जितना हो सके चेष्टा करना बहुत आवश्यक है। मुझसे जहां तक हो सकेगा प्रचार करुंगा।

शठकोप रामनुज–नैमिषारण्य—

आपलोग बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं। करने वाला कोई नहीं है। इससे बड़ा उपकार होगा।

एक मारवाड़ी ज्योतिषि कलकत्ता—

एक आदमी इतना कर रहे हैं। भगवान ने उनको धर्म की रक्षा के लिये खड़ा किया है।

घनश्याम शतप्रस्थी—

यही काम सुफल है इसमें पैसा लगाना सफल है।

लाल बिहारी घोष टालीगंज कलकत्ता—

सभा के प्रतिष्ठाता का नाम कहीं न देखकर बोले— भागवत लोग कहीं आत्म प्रकाश नहीं चाहते। भगवान उनका कल्याण करें।

प्रयाग राज

१३५० (१९४४)

दो आदमियोने कहा—

यह सभा भगवान द्वारा स्थापित है किसी को बुलाया नहीं जाता प्रचारक वक्ता श्रोता सभी अपने आप आते हैं।

श्यामसुन्दर कानपुर जिला निवासी—

बड़ा मनोरम है। किसको देखें किसको न देखे। जिनकी सभा है वे धर्म का कितना प्यार करते हैं कह नहीं सकता। दूलहे को तरह इसे सजाया है। इतना सजाने पर भी सन्तोष नहीं हुआ है। फाटक देखो, झालर देखो, चंदोवा देखो, अहो हृदय में धर्म के प्रति कितना प्रेम है। उसका कण मात्र हमलोग देख पाते हैं। ऐसा पुरुष जब विद्यमान है तब धर्म की रक्षा होगी ही।

एक व्यक्ति—

आपलोग धन्य हैं। इस महत कार्य की सेवा कर के जीवन धन्य कर रहे हैं। आपलोगों को प्रणाम। आप लोग ज्ञानदान कर रहे हैं।

बहुतो ने कहा—

सनतान धम का कार्य यहीं होना है।

दो जन सभा से जाते समय एक प्रचारक को कहने लगे।

हमलोगों को जान पड़ना है। सभी अमृत है। अमृत छोड़कर क्या जाना बनता है?

प्रयाग अर्द्ध कुम्भ

१३५४ (१६४८)

उतने दिन सभा चली। नूतन सामियाना बनाया गया।

सिपाही रामचन्द्र लाल—

"वाह! आपलोग खूब काम कर रहे हैं। हमलोग आपके सेवक हैं।"

निरञ्जनी अखाड़ा के एक साधु—

हमारे महारज जी (मण्डलेश्वर) ने मुझे आदेश दिया है-शास्त्र धर्म प्रचार सभा बहुत उत्तम पुस्तक बांट रही है। हमारा नाम लेकर पुस्तक ले आओ।

निरञ्जनी अखाड़ा के एक और साधु—

आज सबेरे त्रिवेणी में स्नान करते समय महाराज (मण्डलेश्वर) जी ने कहा-शास्त्र धर्म प्रचार सभा के ग्रन्थ सब ग्रन्थरत्न हैं। सब को देखना चाहिये। यही सुनकर ग्रन्थ लेने आये हैं।

स्वामी प्रकटानन्द (इटावा)—

मैं आज इटावा जाने वाला था। किन्तु किताब लेने के

लिये नहीं गया। इटावा में मेरा आश्रम है।

सिन्ध शिकारपुर का एक आदमी—

ऐसा और कहीं नहीं देखा। आपलोग सनातन धर्म के साक्षात् मूर्ति हैं। प्रणाम।

प्रयाग

१३५५ (१९५०)

श्री वासुदेवदीक्षित राय बरेली जि० मेरठ—

बाबूजी आपने जो पुस्तक (जाति भेद) कल हम को दी थी वह कैसी चीज हम क्या कहें। मधुरान्मधु। हम सब पढ़ चुके अक्षर अक्षर-हृदय भर गया। आनन्द के मारे रात में नींद नहीं आयी। पहले दिहात में धर्म कुछ था। शहर में क्षीण था। अब तो सब मरु भूमि की भांति हो गया। यह ले जाते हैं इसी से पहले जैसा होगा। इस छोटी सी पुस्तक में कितना ज्ञान भरा है। कौन लिखे हैं। बताइये नां मनुष्य देह में इतना अच्छा रह सकता ? कलियुग में भगवान का प्रत्यक्ष अवतार नहीं होता है। छिपकर छद्म वेश में वे आये हैं ऐसा जान पड़ता है। कैसी मूर्ति धारण कर किस देश में आये हैं जानने की इच्छा होती है। ....

मैं लड़न पसन्द करता हूं। हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले के साथ मैं लड़ जाता हूं। इस पुस्तक से मुझे लड़ने का अस्त्र मिला। अलीक हिन्दुओं के साथ लड़ने में यह पुस्तक अस्त्रागार का काम करेगी। अन्त में अंग्रेजों द्वारा हिन्दू धर्म तथा

जाति भेद की बहुत प्रशंसा की गयी है। यह हमारे लिये बस का काम करेगी।

अम्बावाई सिन्ध प्रदेश जिला थरपरकर ग्राम मिठी—

आप : जातिभेद पुस्तिका जो दी है वह बहुत अच्छी लगी। उसकी कुछ प्रतियां मुझे देंगे। सिन्धु देश में उसका प्रचार करूँगी। हिन्दूधर्म व परिशिष्ट नामक पुस्तक के नील-वर्ण आवरण पृष्ठ देखकर कहा—यह पुस्तक मानो नवजलधर पटल है। यह हमारे देश की मरुभूमि में जो अमृत की धार वर्षा करेगा इससे त्रिताप शान्ति होगी। हमारी सभा की कार्यवाही सुनकर तथा एक जन सब कुछ कर रहे हैं यह जान कर बोलीं। वे पुरुष कौन हैं मामूली तो नहीं हैं। जरूर महापुरुष हैं। श्रीभगवान के प्रति धर्म के प्रति उनका इतना प्रेम है। अहा! अहा!! मेरा अहोभाग्य है कि इस सभा में आकर मुझे इन ग्रन्थ रत्नों की प्राप्ति हुई।

एक बृद्धा साथ में अपने नाती को लेकर पुस्तक लेने के लिये आयी—

सभा के कार्यकर्ता ने कहा। छोटे बच्चे को पुस्तक देने से क्या होगा। आप तो बूढ़ी हैं। आप क्या पुस्तक पढ़ सकेंगी। बृद्धा ने कहा कि मैं चाहती हूँ कि मेरा नाती आप के खाते में अपना नाम लिख दे और आप लोगों के साथ सामिल हो। विशेष आग्रह पर बच्चे को नाम लिखने दिया गया। वह वीरेन लिख कर आगे लिख न सका। बृद्धा ने

नातीं को सम्बोधन कर कहा—तीर्थ राज प्रयाग में माघ महीने में तुम्हारा नाम इस पवित्र सभा में रहा; तुम और बदमासी नहीं कर सकते। सभा की कृपा तुम्हारा सर्वदा रक्षा करेगी। तुम्हारे भाग्य की सीमा नहीं है। कार्यकर्ताओं से बोली—आप लोग बहुत अच्छा काम करते हैं। इससे उत्तम अर्थ का सदुपयोग दूसरा नही है।

प्रयाग।

१३५६ (१६५० ई०)

इस वर्ष आलमानियम क चादर स फाटक पर दो स्तंभ बनाये गये जिसस सभा की अपूर्व शोभा हुई :--

गोरखपुर क ठाकुर रामबहादुर सिंह--

आप लोग धन्य हैं। मेरा भाग्य हैं कि ऐसी पुस्तक मिली! सनातन धर्म का अच्छा प्रचार होता है सुन कर हम आ गये। धर्मनाश के युग में धर्मरक्षार्थ आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

जौनपुर के एक पण्डित ने कहा—

हम लोगों की मर्यादा रक्षा के लिये यह सब कुछ है।

श्रीवृन्दावन के एक वैष्णव ने कहा—

आप लोगों का परमार्थ का यह प्रयत्न बड़ा अच्छा है।

रीवाँ के श्री शिवकुमार मिश्र ने कहा—

आज कल धर्म प्रचार की बड़ी जरुरत है।

श्रीवृन्दावन के एक शास्त्री ने कहा—

किताब देख कर पहले समझा कि जैसा होता है वैसा

ही होगा। किन्तु देखने पर मालुम हुआ कि सब शास्त्रानु-सार है। देख कर बड़ा आनन्द हुआ।

तृतीय अध्याय

सभा के प्रचार कार्य का आदर्श।

१—रानीगंज।

बंगाल प्रदेश के बांकुड़ा जिला पत्रसार ग्राम चतुष्पाठी के अध्यापक श्रीयुत् ललिताक्ष भट्टाचार्य्य महाशय ने १३४५ साल जुलाई महीना १९३८ में कहा—

प्रायः एक मास पहले सिवड़ी से आसनसोल रेल से जा रहा था। ट्रेन के जिस कमरे में मैं था उसमें दो चार वकील और कुछ गरीब आदमी थे। उखड़ा स्टेशन पर एक जमीन्दार के नायब गोमास्ता और चौदह पन्द्रह आदमी उसी कमरे में सवार हुये।

कुछ देर बाद देश की बात चल पड़ी। गरीबों ने वकीलों तथा अन्य लोगों को लक्ष्य कर कहा—महाशय हम लोग कैसी विपत्ति में पड़े हैं, क्या करें ? कानून बना है कि १४ वर्ष से पहले बालिका का विवाह नहीं हो सकेगा। दो एक आदमियों को जुर्माना भी हुआ है। किन्तु हमारी चौदह पीढ़ी ने भी कभी बड़ी कन्या का विवाह नहीं किया है। हम लोग समझते हैं कि अविवाहिता कन्या के बड़ी हो जाने पर जाति चली जाती है। इसके ऊपर और भी सुनते हैं कि डाक्टर परीक्षा

करके निश्चय करेगा कि कन्या की अवस्था कितनी है। बाप की बात पर विश्वास नहीं। युवती लड़की की परीक्षा डाक्टर करेगा--सब गया देखते हैं। आप लोग इसका कुछ प्रतिकार नहीं करेंगे ?

एक जन बोल उठे--

क्यों बाबू, छोटी अवस्था में कन्या का विवाह होने पर छोटी उमर में ही सन्तान उत्पन्न होती है, इससे माता और शिशु दोनों अल्पायु होते हैं यह क्या अच्छा है ? इसके अतिरिक्त विवाह का भी तो खर्च है। उस रुपये के संग्रह के लिये अधिक समय मिल गया, यह अच्छा नहीं है क्या ?

गरीब आदमी ने कहा—"चिरकाल से दस वर्ष में विवाह हुआ है। कहाँ इससे माता और शिशु क्षीणजीवी हुये हैं। तब जो रोगी है उसकी बात पृथक है। इस समय भी हम लोग चार पांच को पकड़ कर रख सकते हैं। और, रुपये की बात कहते हैं, हमारी जातिमें कन्याका पिता ही रुपया पाता है।

दो एक आदमी चिल्लाने लगे—

बहुत सुविधा होगी इसी लिये बनाया गया है। तुम लोग समझते नहीं। मैं समझा, ये सब अलीक हिन्दू हैं। रानीगंज की एक सभा में सम्मिलित होने के लिये जा रहे हैं।

मैं ने कहा---

क्या सुविधा होती है, मुझे जरा समझाइये तो महाशय ? वे लोग चिल्ला चिल्ला कर इधर उधर की बातें बहुत

कुछ कहने लगे। मैं भी अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ कहा, किन्तु वह आंधी में पत्ते के समान उड़ गया।

सब विफल होते देख अपने बक्स से 'भारतजिर' पत्रिका निकाल कर मैं बाल्यविवाह के सम्बन्ध में पाश्चात्य विशिष्ट व्यक्तियों का मत जोर जोर से पढ़ कर सुनाने लगा।

सब की चिल्लाहट रुक गयी।

मैंने कहा—"महाशय ऋषियों की बात अग्राह्य हुई और पार्टिंटन पिंकट प्रभृति की बात शिरोधार्य—इसी का नाम स्वराज्य है? यही स्वराज्य देश में लाने के लिये आप लोग व्यस्त हैं? सब चुप हो गये।

मैं बाल्यविवाह से कुछ पढ़ने लगा उस रेल कमरे के सभी निस्तब्ध होकर सुनने लगे।

रानीगंज स्टेशन आने के पहले ही सब उतरने के लिये उद्योग करने लगे। यह देख कर मैंने रोक कर कहा—

ऐसा नहीं हो सकता है। आप लोगों ने हिन्दू धर्म की निन्दा की है, ऋषियों की बातों की निन्दा की है, उसका उत्तर सुनना होगा। एक निर्णय न होने पर उतर नहीं सकेंगे। यदि अवश्य उतरना ही पड़ेगा तो चलिये मैं भी उतर पड़ूंगा। न होगा मैं दूसरी गाड़ी से आसनसोल जाऊँगा। मैं उन लोगों के साथ रानीगंज में उतर कर वेटिंग रूम में सब को रोक कर बाल्य विवाह प्रबन्ध पढ़कर सुनाने लगा। इधर सभा की ओर से सभा में जाने के लिए जोर-

दार तगादा होने लगा ।

मैंने कहा---एक जवाब देकर जाइये। सबों ने एक स्वर से कहा---"हम लोग पराजय स्वीकार करते हैं।"

एक जन एम० ए० बी० एल० ने कहा—

महाशय यह क्या पुस्तक है ? अद्भुत और अकाट्य युक्ति है। मेरा मत सम्पूर्ण बदल गया। आप मेरे गुरू हैं। आप ने मुझे ज्ञान दिया।

२ हैदराबाद (निजाम)

हैदराबाद के श्रीयुत वंगपल्ली नीलकण्ठम्—

ट्रुथ पत्रिका पढ़ कर मुग्ध हो गये। एकबार कलकत्ता आकर हम लोगों से मिलने पर बडे आनन्दित हुए।

कुछ दिनों के बाद हैदराबाद से पत्र लिख कर कहा। हैदराबाद की आईन सभा में बाल्यविबाह निरोध बिल पेश होगा। आप लोग पत्र पाते ही "आर्ली मैरेज" २५ प्रति भेज दें। मैं आइन सभा के प्रत्येक सदस्य को पुस्तक दूंगा। जहां जहां अत्यन्त आवश्यक स्थल है वहाँ दाग देकर स्वयं बतलाउँगा।

पुस्तकें यथा संभव शीघ्र भेजी गयीं। नीलकण्ठम् महाशय ने सब कमेटी के २० सदस्यों के पास जा जा कर पुस्तक देकर यथामति समझाने का प्रयास किया। समिति में आलोचना आरंभ होने पर प्रत्येक ने बिल को वापिस लेने के लिये ही मत दिया। फलतः बिल बन्द हो गया। जय सनातन धर्म, जय शास्त्रधर्म प्रचार सभा।

३—पुरी धाम।

आषाढ़ महीने में रथयात्रा से तीन दिन पहले कलकत्ते से हम तीन मूर्ति चले। एक साधु, एक ब्राह्मण कुमार और एक यह अधम पापी! हिन्दू धर्म व परिशिष्ट नामक पुस्तक बांटने गये हैं, किन्तु केवल पुस्तक वितरण करना मात्र ही कार्य नहीं था। हिन्दूधर्म के प्रति, शास्त्र के प्रति, लोग श्रद्धावान बनें, ऐसा करके अंगीकार कराकर पुस्तक देना होगा तथा नास्तिकों को पराजित कर हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता प्रमाणित करनी होगी। ऐसे महान् कार्य में अपने को अयोग्य समझ बहुत भय और संकोच के साथ यात्रा की गयी। किन्तु श्रीहरि की अपार कृपा और हिन्दू धर्म व परिशिष्ट नामक पुस्तक के अपूर्व प्रभाव से जो हुआ है वह हम लोगों की कल्पना के अतीत है।

ट्रेन में हुगली जिला निवासी एक ब्राह्मण बालक के साथ आलाप हुआ। हम लोगों के कार्य की बात सुन कर वह एक पुस्तक देखना चाहा। पुस्तक पढ़कर बड़े आग्रह से हम लोगों के साथ काम करने के लिये अनुमति प्रार्थना की।

पुरी धाम में पहुँचने पर दो दिन बाद शनिवार को एक अवसर प्राप्त सिविलसर्जन को पुस्तक दिखलायी। वे पुस्तक पढ़ कर रोने लगे। पीछे बोले,' मैं नास्तिक था। एक भयंकर शोक में पड़ जाने पर कुछ चैतन्य हुआ। तब मैं एक साधु के चरणोंमें पड़ा। किन्तु हमारा इतना पाप है कि विज्ञान सम्बन्धी मोह मिटा नहीं। वह तो जीवन संगी जैसा बन गया था।

मेरा भगवान नहीं था। विज्ञान ही मेरा भगवान था। किन्तु भाई जो तुमने छोटी पुस्तक दी है, उससे मेरा मोह कुछ कटा है। मैं अब समझ गया हूँ—विज्ञान की अपेक्षा शास्त्र कोटि गुण श्रेष्ठ है। भाई आज से इस पुस्तक के आदेशानुसार चलूँगा। विज्ञान और आधुनिक सभ्यता की चकाचौंध में अब न भूलूँगा। भाई तुम लोग धन्य हो। आज इस पुस्तक का दर्शन हुआ।

अवसर प्राप्त सिविल सर्जन मुझे एक उच्चपदस्थ राजकर्मचारी के पास ले गये। वे मुझे देखते ही अनेक प्रकार से परिहास करने लगे। मैं और कुछ न कह कर विज्ञान की बातें जहां है वही अंश पढ़ कर सुनाने लगा। उन्हें सभी बातें माननी पड़ीं। इसके पश्चात् "नारीसङ्ग" नामक अध्याय पढ़ सुनाया। तब वे बोले, तुम अभी बच्चे हो तुम्हें सभी बातें तो कही नहीं जा सकती। जो व्यापार हो रहा है और लड़कियां जो कर रही हैं, उस से बुद्धि हत हो जाती है। बचा, इस पुस्तक के लिये मैंने तिरस्कार किया है इससे मैं दुखित हूं। हमारे पास कितने ही आते हैं और खाक भभूत ले आते हैं, मैं तुम्हें भी वैसा ही समझा था।

"मै पुस्तक जितना ही देखता हूं उतना ही अच्छा लगता है। अहा! यह पुस्तक एक रत्न भण्डार है। बच्चा मुझे क्षमा करना–तुमने अमूल्य निधि दिया और मैंने तुम्हें जो मन में आया सो कह सुनाया। तुम अन्य सज्जनों के पास जाओ,

कोई यदि विघ्न करे, तुम मुझे बतलाना, मैं यदि कुछ सहायता कर सकूंगा तो करूँगा।"

अवसर प्राप्त सिविलसर्जन चले गये। ये सज्जन मुझे एक दूसरे उच्च कर्मचारी के निकट ले गये। वे मुझे देखते ही बोले "क्या ? धर्म ? धर्म दर्म मेरा नहीं है। जितने बेवकूफ हैं वे ही धर्म करते हैं।" इसके अनन्तर जो मुझे ले गये थे उनकी ओर घुम कर बोले—आप भी इसी दल में जुटे हैं क्या ?" मेरे साथ के सज्जन बोले "इस लड़के से थोड़ा सुनिये तो ! आप की क्या अवस्था होती है देखें।"

मैं उस समय दूसरे महाशय को 'विज्ञान' और 'नारीत्व' ये दो अध्याय पढ़ सुनाया। वे कुछ देर मौन रह कर बोले:—

"मैं बड़ा नास्तिक हूं इसी लिये तुम्हारे साथ ऐसी बात की। मैं कुछ कुछ पूजा पाठ करता हूँ, किन्तु हिन्दू धर्म इतना महान है, ऐसा कभी नहीं समझा था।"

"मैं तुमसे क्षमा चाहता हूं। जिन्होंने इसे लिखा है और तुम्हारे द्वारा भिजवाया है उनके निकट मैं ऋणी रहा। आज से मैं इसे पढ़ूँगा, घर में सबों को सुनाऊँगा और जितना हो सकेगा प्रचार करूँगा ? इस पुस्तक को पढ़ कर और नवीन सभ्यता की चकाचौंध में कौन पड़ेगा ? इस पुस्तक के पढ़ने के पहले कौन जानता था कि हमारा धर्म इतना महान है ? हजार हजार वर्ष पहले ऋषिगण जो जानते थे आज उसमें से विज्ञान थोड़ा थोड़ा जान पाता है और पद पद पर भूल भी करता है।"

दूसरे रविवार के दिन सिविल सर्जन महाशय मुझे एक उच्च पदस्थ पारसी कर्मचारी के पास ले गये। वे दो एक मिनट आलोचना कर के और पुस्तक पढ़ कर बोले।

"विज्ञान भ्रान्त है और यही मार्ग प्रशस्त मार्ग है, इसे समझने पर निश्चय ही इसी मार्ग का अनुयायी होगा।"

हुगली जिला का ब्राह्मण कुमार हम लोगों को एक पश्चिम भारतीय पण्डित के पास ले गया। पण्डित जी का विशेष सम्मान भी है और बहुत से अनेक छात्र भी हैं। वे पुस्तक देख कर बोले—

ओः! ऐसे पुरुष भी भारतवर्ष में हैं? तब आशा है कि जो हिन्दू कह कर परिचय देने में लज्जित होते हैं दूसरों का पदानुसरण करते हैं उनकी भी एक दिन मति गति फिर सकेगी। श्री भगवान के निकट प्रार्थना है कि ये महापुरुष दीर्घजीवी हों। आप भी धन्य हैं, को इस पुस्तक के प्रचार का सौभाग्य हुआ। मैं भी अपने को धन्य और कृतार्थ समझता हूं जो इस पुस्तक की प्राप्ति हुई और आप लोगों का दर्शन हुआ। तब समझता हूँ कि प्रभु जगन्नाथ की कृपा दृष्टि हुई है। मैं बड़ा पापी घोर नास्तिक हूं। जगन्नाथ देव ने इस पापी के प्रति भी दया की। इतना कहते कहते वे रो पड़े, फिर कहने लगे—

'मैं इतना बड़ा नास्तिक हूं, कहता हूं सुनिए—

'मै उत्तर भारत ई० आई० रेलवे में कार्य करता था।

बड़ा नास्तिक था। जहांतक अनाचार किया जा सकता है करता था। मेरा एक पुत्र (दश बारह वर्ष का) दिन रात भगवान का नाम जप पाठ पूजन करता रहता था। यह मुझे असह्य हो गया। मैंने बार बार मना किया। इससे वह बोला "आप का जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ है, आप ऐसा करते हैं अच्छा नहीं करते हैं। भगवान के चरणों में मति रखें नहीं तो विपत्ति में पड़ जायंगे।' एक दम पागल होकर मैंने उसे भयंकर मार मारा। इससे उसे ज्वर हुआ। दो चार दिन ज्वर भोग कर वह लड़का मर गया। इसके पश्चात मेरी कन्या मरी। इससे भी इस पापी को चेत नहीं हुआ। इसके बाद भूकम्प में जहां जो मेरे थे सब दबकर मर गये। मैं अकेला बच रहा। तब मैं पागल जैसा होकर जगन्नाथ पुरी आया। इस पुस्तक के देखने से लड़के की याद आती है। उस समय यदि उसकी बात भी सुना होता। (दीर्घनिश्वास लेकर)— भगवान ने ठीक न्याय किया है। तुमने मुझे पुस्तक देकर परम शान्ति प्रदान किया। मैं नित्य पाठ करूंगा।'

इसी समय पण्डित जी के पास कईएक बंगाली बैठे थे। वे लोग खड़े होकर प्रभु जगन्नाथ का नाम लेकर बोले—हम सब लोग पुस्तक पढ़ेंगे और घर घर में प्रचार करेंगे। 'हम लोग हिन्दू के समान आचार पालन करेंगे लोगों, को हिन्दू जैसा चलने के लिये अनुरोध करेंगे, उस महापुरुष के चरणों में मेरा कोटि कोटि सास्टांग कहियेगा।'

१४ की छुट्टी में बहुतेरे छात्र पुरी घुमने के लिये आये हैं। हम लोगो का साथ वही ब्राह्मण कुमार, समुद्र किनारे एक मकान में जहाँ बहुत-से छात्र अड्डा जमाते थे, वहां मुझे ले गया। वहां जाकर मैं बोला—

"मैं एक पुस्तक लाया हूँ। इसमें हमारा धर्म कितना बड़ा और आधुनिक सभ्यता उसके सामने कितना तुच्छ है यह दिखलाया गया है।"

लड़कों ने कहा—इतना धर्म हम लोगों को सहन नहीं होता कुछ मजे की बात हो तो कहिये, नहीं तो इसके पढ़ने से क्या होगा ?

मैंने कहा "हां मजे की वात है ही। यूरोप के वैज्ञानिकों ने अपने मुख से स्वीकार करते है कि विज्ञान की भूल होगीही। इस पर भी उन लोगों ने माया को भी मान लिया है"

मैंने थोड़ा पढ़ कर सुनाया। उसमें दो चार बी० एस० सी० के छात्र वोल पड़े "स्वीकार करते हैं श्रेष्ठ वैज्ञानिक गण कि विज्ञान सब भूल हैं। किन्तु यही कह कर इतना धर्म अच्छा नहीं लगता है।"

मैं 'आचार' और 'नारी संग' दो अध्याय पढ़ सुनाया। इसे सुन कर किसी किसी ने कहा—"सचमुच यह अच्छी वस्तु है। महाशय क्या करूँ हम लोगों का धर्म इतना सुन्दर हैं हम लोगों को कभी कोई कहा नहीं। इतना दिन हम लोग मौज-मजा में घुम फिर कर वड़ा अन्याय किये हैं।" पुस्तक के कारण मेरा इतना सम्मान हुआ कि मुझे 'सर' कह कर लोग

पुकारने लगे। मैं किन्तु उन सबों में छोटा था। किसी ने कहा—"हम स्वीकार करते हैं अच्छे होकर चलेंगे।"

एक ने कहा—'अच्छा संग को इतना खराब कौन कहते हैं ? यदि मैं ठीक रहा तो मेरा क्या करेगा।'

मैं उस समय अपने निज जीवन का इतिहास कह सुनाया। कुसंग में पड़ कर कैसा सर्वनाश किया था और महापुरुष की कृपा के बिना मेरा किसी प्रकार से भी उद्धार नहीं होता, कह कर मैंने कुछ घटनायें कह सुनाई। एक लड़के ने मुझे कहा—

'सत्य है क्या ? इस इलाके में मैं सब से बदमाश लड़का मैं हूँ। पक्का बदमाश। सब जानते हैं मैं किसी के काबू नहीं। मैंने ठीक किया था कल इसाई बनूंगा। हमारे धर्म में इतनी अपूर्व वस्तुओं के रहते इसाई होने क्यों जाऊँगा। मैं वचन देता हूँ हिन्दू होने की चेष्टा करूँगा।"

एक दूसरा लड़का रो पड़ा वह बोला—अहा ! मेरे पिता जी ने धर्म पालन करने के लिये कितना कहा था। मैंने कभी उनकी वातों पर ध्यान नहीं दिया ; देखता हूँ कितनी बदमाशी की है। वे यदि आज जीवित रहते उनके चरणों में लोट कर कर खूब रोता।"

इसी समय चार लड़के और आ गये। एक ने कहा—'अरे सिनेमा नहीं चलेगा ? समय हो गया।'

जो यहाँ थे उनमें से एक बोला—"यहाँ बहुत अच्छी वस्तु मिली है।"

तब इस लड़के ने आकर कहा "बात क्या है! तुम लोग धर्म धर्म करके पागल हो गये देखता हूँ।"

जो लड़का इसाई होने के लिये कह रहा था, उसी को बड़े यत्न से पुस्तक पढ़ते देख नवागत एक छात्र बोला--

"अरे तुम भी पढ़ रहा है ? तुम भी जुट गया क्या ?"

इसके उत्तर में वह बोला—"यदि सचमुच तुम समझना चाहो तो बस ये सज्जन तुमको अच्छी तरह समझा देंगे। और सिनेमा तो रोज ही है। किन्तु यह सुयोग तो और नहीं होगा।"

नवागतों में एक ने कहा—"यदि ऐसा है तब कभी सिनेमा नहीं जायेंगे। पुस्तक एकबार देखें। यह कहकर पुस्तक पढ़ने बैठा। कुछ क्षण बाद वह स्तंभित होकर मेरी ओर ताकने लगा। थोड़ी देर में बोला--

"ओह! हम लोगों के धर्म में ऐसी वस्तु है? हमलोग इसबार निश्चय ही इस धर्म के लिये प्रणों की बाजी लगा देंगे।"

सूर्यास्त के समय मुझे साथ लेकर वे सब समुद्र किनारे गये। वहां प्रायः १२ लड़कियां गोल बांध कर बैठी थीं। उन्हें देखकर इसाई होने जो छात्र जा रहा था उसने कहा--

"आप नारी संग की बात कर रहे थे-इन लड़कियों ने ही हमलोगों का सर्वनाश किया है।"

२० २५ जन छात्रो ने यह सुनकर कहा--"इन लड़कियों ने ही सर्वनाश किया है।"

वह छात्र कहने लगा—"इन सबों का कालेज में पढ़ना, टहलना अनेक लड़कों के लिये काल हुआ है। इनके बाप ही

इसके लिये उत्तरदायी हैं। वे लोग कालेज लड़कियों को भेजेंगे। अकेले पुरी भेजेंगे। साथ में एक भी पुरुष नहीं है। मेरी इच्छा होती है ऐसे बापों की शिक्षा अच्छी तरह दूँ। ये सब लड़कियां दुश्चरित्रा हैं। जो दो एक अच्छी थीं वे भी अब अच्छी नहीं हैं।"

दो लड़कियों को अन्य स्थान में देखकर एक लड़के ने कहा—"ये दोनों भी इसी दल में हैं। इन सबों ने सब लड़कों को बिगाड़ा है। होटल में अकेले जाती हैं और लड़कों का शिर खाती है। (दो लड़कियों को बुलाकर) इन लड़कियों को यदि मेरा वश चलता, टुकड़ा टुकड़ा कर के समुद्र में फेंक देता और इनके बापों को कोड़े लगाता। तब ठीक होता।"

लड़कियों ने सब सुना। बिना कुछ कहे सब चली गयीं।

उसी दिन के अनुसार मै समुद्र किनार से चला आया। कह आया "आप लोग पुस्तक पढ़े। मैं कल प्रातः पुनः आऊंगा।"

दूसरे दिन एक मारवाड़ी से भेंट हुई। वे समुद्र स्नान के लिये जा रहे थे। एकप्रति 'हिन्दू धर्म वपरिशिष्ट' दिखाने पर उन्होंने कहा "यह पुस्तक क्या आर्य समाजियों की है? 'हिन्दू धर्म' नाम रखा है! वे सब प्रायः ऐसे ही करते हैं। यदि ऐसा है तो मैं पैरों से ठुकरा दुँगा और यदि हमारे सनातन धर्म की पुस्तक है तो शिरमाथे पर चढ़ाऊंगा।"

थोड़ा थोड़ा पुस्तक पढ़कर मारवाड़ी ने कहा "हाँ यह पुस्तक हमारे धर्म की है। ऐसे लोग भी देश में हैं जो ऐसी पुस्तक

लखकर छपाकर बिना मूल्य वितरण करते हैं? ऐसे महपुरुष का जब आविर्भाव हुआ है तो मैं खूब समझता हूँ कि पाप क्षय होगा और हमारे धर्म की रक्षा होगी। प्रभु जगन्नाथ उनके कार्य में जय जयकार करें। जहां तक मुझसे हो सकेगा मैं करुंगा यह कहने की बात नहीं है।"

इसके बाद लड़कों के पास गया। एक लड़का बोला "हम लोग अर्जुन से आदमी कुछ कुछ पुस्तक पढ़े हैं। हमलोगों का धर्म जतना उत्तम है और हमलोग उसके विषय में उतने ही अज्ञ हैं। हमलोग हिन्दू सन्तान कहने में अब गर्व अनुभव करते हैं। हमलोग एक दम अज्ञ हैं इसीसे अपना धर्म छोड़ कर दूसरा क्या कहते हैं इसके लिये दौड़ते फिरते हैं। आज से हमलोग हिन्दू धर्म का आदेश पालन करेंगे और पुस्तक की बातों का घर घर में प्रचार करेंगे। पुरी शहर में बाइसिकिल से घूम घूम कर प्रचार करेंगे। हमलोग सब प्रकार की उच्छृंखलता त्याग देंगे।"

उन सबों ने अशिष्टता की थी इसलिये क्षमा मांगी। कटक शहर में बांटने के लिये कुछ पुस्तक ले गये। सबों ने जगन्नाथ जी का नाम लेकर प्रतिज्ञा की कि हमलोग पुस्तक पढ़ेगें और प्रचार करेंगे।

एक लड़का—मुझे एक धार्मिक मुसलमान के पास ले गया, मुसलमान पुस्तक थोड़ा पढ़ कर बोला—

"आप लोगों का धर्म बड़ा चमत्कार पूर्ण है और ये सब लड़के अपने को हिन्दू कह कर परिचय देने में लज्जा अनुभव

करते हैं, मैं मुसलमान हूँ, हमारी इच्छा हिन्दू होने की करती है, जगरन्नाथ देव से प्रार्थना है, वे मेरा यह जन्म समाप्त कर दूसरे जन्म में हिन्दू कूल में जन्म दें। मेरे पिता मुसलमान हुये थे। इस समय मैं हिन्दू बनूं, इसका कोई उपाय नहीं है; हिन्दू होना बड़े सौभाग्य की बात है, हिन्दू धर्ममें आचार विचार है, अन्य धर्म में नहीं हैं।' उसके बाद आंखों में आँसू भर कर बोला—जिन्होंने यह पुस्तक लिखी है, उन्हें मेरा सलाम कहियेगा।' आप ने मुझे यह पुस्तक दी, आपको भी सलाम करता हूँ। शाष्टाङ्ग कर रोते २ उसने कहा—"जगन्नाथ मेरी रक्षा करो।

महेश में पुनर्यात्रा-१३४३।

यों लोग पुरी धाम में गये थे, उनके अतिरिक्त और चार जन गये। श्रीरामपुर बैन विद्यालय (Wearing School) के एक छात्र ने आकर पुस्तक मांगी। पुस्तक देख कर बोला—

"मैंने इस पुस्तक को देखा है इस पुस्तक की तुलना नहीं है। आप लोगों के साथ कार्य्य करने की बड़ी इच्छा होती है। आप लोग यदि मुझे अपने साथ रखें तो मैं कृतार्थ हो जाऊँ। देखिये हम लोग देहात के ग्रामीण आदमी है, इसलिये इस समय भी धर्म की अवज्ञा करना नहीं सीखें। शहर के लड़के दो पन्ना साइन्स पढ़कर समझते हैं कि वे लोग सर्वज्ञ हैं। इसी अहंकार के कारण वे लोग शास्त्रकारों को गदहा कहते और पिता माता तथा गुरुजनों की अवज्ञा करने में व्यस्त रहते हैं। आपलोग जो कार्य कर रहे हैं वह कार्य किसी ने नहीं किया है इन पुस्तकों के द्वारा स्कूलों की कुशिक्षा विस्मय फल से सब की रक्षा करते हैं। आप लोग धन्य हैं।"

एक वृद्ध हम लोगों की पुस्तक लेकर और कुछ क्षण पढ़ कर बोले—'भगवान आप लोगों को दीर्घजीवी बनावें, इसकी अपेक्षा अच्छा कार्य दूसरा नहीं है। (यह बात बार २ कहने लगे) इस वार हम लोगों की धर्मरक्षा होगी। हम लोगों को बार बार आशिर्वाद देने लगे। इन्हें अपने लड़कों के व्यवहार से मार्मिक दुःख हुआ था इसलिये लड़कों के आचरण के सम्वन्ध में वार वार बड़े दुःख से कहने लगे—'मेरे दो पुत्र हैं बड़ा कलकत्ता जी० पी० ओ० में १३० रुपये महीना में काम करता है। इसी से उसका 'इतना तेज, वह मुझे एक दिन बोला। 'सन्ध्या पुजा करना, यह सब पाखण्ड मुझसे सहा नहीं जाता।' मैंने कहा—'तुमसे सहा नहीं जाता तो मकान छोड़ कर चले जा सकते हो, तुम्हारे जैसे पुत्र का मैं मुँह देखना नहीं चाहता।' तुम दूर हो जावो। वह मकान छोड़ कर अलग किराये पर रहता है। मेरा छोटा लड़का भी ऐसा ही 'उदण्ड' हैं–तव महीना कम पाता है, इसी से इसका तेज भी कम है. इसी से मुझे थोड़ा मानता है। आज कल के लड़कों की बातें मुख पर लाने लायक नहीं है। मैं यह पुस्तक उसे देकर कहूंगा—इसे मानकर चलो, या युक्ति तर्क से इसका उत्तर दो। इस पुस्तक की प्राप्ति बड़े भाग्य की बात है। नारायण तुम लोगों का मंगल करे।"

एक मकान के छत के उपर कतिपय पुलिस कर्मचारी मजिस्ट्रेट, कमिशनर साहब, मेला जिससे ठीक से चले। देख रहे थे। बंगाली वावुओं के केवल चाहने से ही, एक एक

करके हिन्दू धर्म और परिशिष्ट दी गयी। वे लोग बड़े ध्यान से पढ़ने लगे। साहबों को "ओपेन लेटर टु मिस्टर गान्धी" नामक पुस्तक दी गयी। वे लोग भी बड़े ध्यान से पढ़ने लगे। एक पुलिस कर्मचारी और एक कर्मचारी को वही देते समय कहा—महाशय यह लीजिये अपने लड़कों को दीजिए—वे लोग इसका जवाब न दे सकेंगे। उस सज्जन ने कहा—ऐसा होने पर मेरा बड़ा उपकार होगा। (आँखों में आँसू आ गया)

"महाशय—क्या कहें! हमारे दो लड़के कॉलेजों में पढ़ रहे हैं, खर्च देते देते प्राण निकल रहा है—कितने ढंग और कितने पर खर्च की जरुरत पड़ती है, इसका कोई ठीक नहीं। मेरी सामान्य आमदनी है और बाबुओं की बबुआनी देख कर मन में नहीं आता है कि वे मेरे लड़के हैं। मुझे कुछ कहने का उपाय ही नहीं है। यदि कुछ कहने जाता हूँ तो वे कहते हैं कि तुम बुढ़ा आदमी क्या जानता है? तुम चुप रहो।"

इसके बाद वही सज्जन मुझसे बोले "बाबा! तुम एक बार मेरे लड़कों की बात उस महापुरुष के श्रीचरणों में निवेदन करना, वे यदि दया करके इनकी मति गति सुधार दें।

मैंने उन्हें कहा—'यह पुस्तक अपने लड़कों को दीजियेगा और कहियेगा—जो कोई इसका उत्तर दे सके तो दें। उत्तर न देने पर इस पुस्तक के अनुसार जीवन यापन करना पड़ेगा।'

महाशय जी के आंखों में जल आ गया। वे सहमत हुए, वे मुझे बार बार आशिर्वाद देने लगे और कहा कि महापुरुष को मेरा प्रणाम कहियेगा। हिन्दू शास्त्रधर्म की जय।

ॐ भद्रं करणेभिः इति शान्तिः।